Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَاْكُلُوْٓا اَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ اِلَّآ اَنْ تَكُوْنَ تِجَارَةً عَنْ تَرَاضٍ مِّنْكُمْ وَلَا تَقْتُلُوْٓا اَنْفُسَكُمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِكُمْ رَحِيْمًا (सूरत अन्निसा आयत :30)

अनुवाद: हे वे लोगो जो ईमान लाए हो अपने माल नाजायज़ तरीक़ा से न खाया करो। हां यदि वह ऐसा व्यापार हो जो आपसी सहमति से हो और तुम अपने आप को कत्ल न करो। नि:सन्देह अल्लाह तुम पर बार बार रहम करने वाला है।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

साप्ताहिक क़ादियान बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

वर्ष 5

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

अंक- 34

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

29 ज़विल हज्जा 1441 हिजरी कमरी 20 ज़ुहूर 1399 हिजरी शमसी 20 अगस्त 2020 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

तुम्हारे पैदा करने से ख़ुदा तआला का उद्देश्य यह है कि तुम उस की इबादत करो और उसके लिए बन जाओ। दुनिया तुम्हारा मूल उद्देश्य न हो।

अत: ख़ुदा तआला मुत्तक़ी की ज़िन्दगी की परवाह करता है और इस की बका को प्रिय रखता है और जो उस की इच्छा के विरुद्ध चले वह उस की पर्वा नहीं करता

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

इन्सानी पैदाइश का मूल उद्देश्य इबादत है

अत: कितना ज़रूरी है कि तुम इस बात को समझ लो कि तुम्हारे पैदा करने से ख़ुदा तआला का उद्देश्य यह है कि तुम उस की इबादत करो और उसके लिए बन जाओ। दुनिया तुम्हारा मूल उद्देश्य न हो। मैं इस लिए बार-बार इस एक बात को वर्णन करता हूँ कि मेरे नज़दीक यही एक बात है जिसके लिए इन्सान आया है और यही बात है जिससे वे दूर पड़ा हुआ है। मैं यह नहीं कहता कि तुम दुनिया के कारोबार छोड़ दो। बीवी बच्चों से अलग हो कर किसी जंगल या पहाड़ में जा बैठो। इस्लाम उस को जायज़ नहीं रखता और रहबानीयत इस्लाम का उद्देश्य नहीं। इस्लाम तो इन्सान को चुस्त तथा होशियार और तय्यार बनाना चाहता है , इस लिए मैं तो कहता हूँ कि तुम अपने कारोबार को चेष्ठा से करो। हदीस में आया है कि जिसके पास ज़मीन हो और उस का प्रयोग न करे तो इस से सवाल पूछा जाएगा। अत: अगर कोई इस से यह अभिप्राय ले कि दुनिया के कारोबार से अलग हो जाए वे ग़लती करता है। नहीं। असल बात यह है कि यह सब कारोबार जो तुम करते हो इसमें देख लो कि ख़ुदा तआला की रज़ा उद्देश्य हो और इस के इरादा से बाहर निकल कर अपने उद्दश्यों तथा लक्ष्यों को मुक़द्दम न करे।

अत: अगर इन्सान की ज़िन्दगी का उद्देश्य यह हो जाएगा कि वह केवल भोग विलास में ज़िन्दगी व्यतीत करे और इस की सारी कामयाबियों का चरम खाना पीना और लिबास ही हो और ख़ुदा तआला के लिए कोई ख़ाना उसके दिल में बाक़ी न रहे तो यह याद रखो कि ऐसा आदमी अल्लाह तआला की फितरत को पलटने वाला है। इसका परिणाम यह होगा कि वह धीरे धीरे अपनी शक्तियों को बेकार कर लेगा। यह साफ़ बात है कि जिस आशय के लिए कोई चीज़ हम लेते हैं अगर वह वही काम न दे तो उसे बेकार क़रार देते हैं। जैसे एक लक्कड़ी ,कुर्सी या मेज़ बनाने के लिए लें और वह इसकाम के नाक़ाबिल साबित होतो हम उसे ईंधन ही बना लेंगे। इसी तरह पर इन्सान के जन्म की मूल उद्देश्य तो अल्लाह तआला की इबादत है लेकिन अगर वह अपनी फ़ितरत को बाहरी संसाधनों और बाहरी सम्बन्धात से परिवर्तित करके बेकार कर लेता है तो ख़ुदा तआला उस की परवाह नहीं करता। इसी की तरफ़ यह आयत इशारा करती

शेष पृष्ठ 12 पर

आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नसीहतें

आज़ान का महत्व और बरकतें

हज़रत अब्बू सईद ख़ुदरी रज़ी अल्लाह अन्हो से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जब तुम अज़ान सुनो तो जिस तरह मुअज़्ज़िन कहता है , कहा करो

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ी अल्लाह अन्हो से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जिसने अज़ान सुनने के वक़्त यह दुआ की कि

اَللّٰهُمَّ رَبَّ هٰذِهِ الدَّعْوَةِ التَّامَّةِ وَالصَّلَاةِ الْقَائِمَةِ آتِ مُحَمَّدًا الْوَسِيْلَةَ وَالْفَضِيْلَةَ وَابْعَثْهُ مَقَامًا مَّحْمُوْدًا الَّذِيْ وَعَدْتَّهُ

तो क़यामत के दिन मेरी सिफ़ारिश उसके लिए वाजिब होगी

हज़रत अबू हुरैरा रज़ी अल्लाह अन्हो से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अगर लोग जानते कि अज़ान में और पहली सफ़ में क्या (सवाब) है और फिर सिवाए क़ुरआ डालने के कुछ उपाय न पाते तो वह ज़रूर ही क़ुरआ डालते और अगर वे जानते कि पहले समय ज़ुहर पढ़ने में क्या (सवाब) है तो वे बे-तहाशा उस की तरफ़ दौड़ते और अगर वे जानते कि इशा और फ़ज्र की नमाज़ में क्या (सवाब)है तो वे आते चाहे घिसटते हुए ही आना पड़ता।

(सहीह बुख़ारी किताबुल आज़ान प्रकाशन 2006 ई कादियान)

कुरआन का यह दावा है कि इसमें वे सब सच्चाइयां मौजूद हैं जो पहली सब किताबों में पाई जाती हैं

हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहिब खलीफतुल मसीह सानी फरमाते हैं कि

"आरोप करना सहल काम है जो कोई इन्सान अपने विपक्ष के विरुद्ध लगा सकता है। सच्चाई का इन्कार करने वाले हमेशा आरोपों तक ही अपने हमला को सीमित रखते हैं कभी कोई ठोस काम मुक़ाबला पर नहीं करते जिससे उनके गुण भी प्रकट हों और उनके आरोप की वास्तविकता भी ज़ाहिर हो। यही अवस्था क़ुरआन करीम का इन्कार करने वालों की था। वे क़ुरआन करीम पर एतराज़ तो करते थे लेकिन इसके मुक़ाबला पर कोई शिक्षा ऐसी प्रस्तुत न करते थे जो इस से उत्तम तो अलग रही उसके बराबर भी हो। आज तक क़ुरआन करीम के विरोधियों का यही हाल रहा है। मसीही लेखक क़ुरआन करीम पर आरोप लगाते चले जाते हैं लेकिन आज तक इस मांग को पूरा करने का साहस नहीं कर सके कि इस के जैसा लाएं। वे कहते हैं कि क़ुरआन करीम ने इंजील का अमुक विषय चुरा लिया है। तौरात से अमुक बात उड़ा ली है ज़र्तशती किताबों से अमुक़ शिक्षा ली है लेकिन यह जुर्रत नहीं कि इंजील तौरात और ज़र्तश्ती किताबों में से विषय लेकर ख़ुद कोई किताब ऐसी बना दें जो क़ुरआन करीम जैसी सारगर्भित हो। शहद पर इन्सान एतराज़ तो आसानी से कर सकता है कि मक्खियों ने फूलों से ख़ुशबू उड़ा ली फलों में से मिठास चुरा ली। मगर बात तो तब है कि वैसा शहद बना कर दिखा दे।

शेष पृष्ठ 8 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ का यूरोप का सफर, सितम्बर अक्तूबर 2019 ई (भाग-15)

जामिया अहमदिया जर्मनी के छात्रों की सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ के साथ एक मुलाकात

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादक: शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

(15 अक्तूबर 2018 ई दिनांक मंगलवार शेष.....)

जामिया के छात्रों साथ एक बैठक

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला अज़ीज़ जामिया के हाल में तशरीफ़ ले आए जहां जामिया अहमदिया के छात्रों का हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ के साथ एक प्रोग्राम का आयोजन हुआ। प्रोग्राम का आरम्भ तिलावत क़ुरआन करीम से हुआ। जो हाफ़िज़ एहतिशाम अहमद ने की और इसके बाद इसका उर्दू भाषा में अनुवाद प्रस्तुत किया। हुज़ूर अनवर ने हाफ़िज़ एहतिशाम को सम्बोधित करते हुए फ़रमाया कि हाफ़िज़ केवल नाम के हो या क़ुरआन करीम हिफ़्ज़ किया हुआ है। क्या तरावीह नहीं पढ़ाते? अगर जर्मनी में कोई ऐसी जमाअत नहीं जो पूरा क़ुरआन करीम सुने तो फिर तुम जामिया में ही तरावीह पढ़ा दिया करो।

इसके बाद ज़ाफिर अहमद ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की निम्नलिखित हदीस प्रस्तुत की। हज़रत अबू दर्दा रज़ि वर्णन करते हैं कि मैंने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना कि जो व्यक्ति इल्म की तलाश में निकले अल्लाह तआला उसके लिए जन्नत का रास्ता आसान कर देता है और फ़रिश्ते आलिम के काम पर ख़ुश हो कर अपने पर उसके आगे बिछाते हैं और आलिम के लिए ज़मीन तथा आसमान में रहने वाले बख़्शिश मांगते हैं। यहां तक कि पानी की मछलियाँ भी उसके हक़ में दुआ करती हैं। आल्म की फ़ज़ीलत आबिद पर ऐसी है जैसी चांद की दूसरे सितारों पर और उलेमा अम्बिया के वारिस हैं। अम्बिया रुपया, पैसा विरसा नहीं छोड़ जाते बल्कि उनका विरसा इल्म तथा इर्फ़ान है। जो व्यक्ति इल्म प्राप्त करता है। वह बहुत बड़ा हिस्सा और अधिक ख़ैर प्राप्त करता है।

इसके बाद राना शीराज़ ने हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी अल्लाह अन्हो की नज़म

अह्दे शिकनी न करो अहले वफ़ा हो जाओ
अहल शैताँ न बनो अहले ख़ुदा हो जाओ

ख़ुश-इल्हानी से प्रस्तुत की। इसके बाद महफ़ूज़ मुनीर छात्र दर्जा राबिया ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पुस्तक से एक उद्धरण प्रस्तुत किया।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं: "ऐसे नौजवान पैदा हों जो दुनियावी हितों को बिल्कुल छोड़ करके अपनी ज़िन्दगियां केवल धर्म की सेवाओं के लिए वक़्फ़ कर दें। हज़रत रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा के नमूना देखना चाहिए वे ऐसे न थे कि कुछ धर्म के हों और कुछ दुनिया के बल्कि वे ख़ालिस धर्म के बन गए थे और अपनी जान तथा माल सब कुछ इस्लाम पर क़ुर्बान कर चुके थे ऐसे ही आदमी होने चाहिऐं, जो सिल्सिला के लिए मुबल्लग़ीन और वाइज़ीन निर्धारित किए जाएं वे सन्तुष्ट होने चाहिऐं और दौलत तथा माल की उनको फ़िक्र न हो। हज़रत रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब किसी को तब्लीग़ के लिए भेजते थे तो वे हुक्म पाते ही चल पड़ता था। न सफ़र ख़र्च मांगता था और न घर वालों की ग़रीबी का बहाना पेश करता था। यह काम उस से हो सकता है जो अपनी ज़िन्दगी को इसके लिए वक़्फ़ कर दे मुत्तक़ी की ख़ुदा तआला आप मदद करता है वह ख़ुदा के लिए कठोर ज़िन्दगी को अपने लिए सहन करता है ख़ुदा उसे प्यार करता है जो ख़ालिस धर्म के लिए हो जाए हम चाहते हैं कि कुछ आदमी ऐसे चुने जाएं जो तब्लीग़ के काम के लिए अपने आपको वक़्फ़ कर दें और दूसरी किसी बात की परवाह न करें। हर किस्म के कष्ट उठाएं और हर स्थान पर फिरते रहें और ख़ुदा की बात पहुंचाएं। सब्र और धैर्य से काम लेने वाले आदमी हों उनकी तबीअतों में जोश न हो प्रत्येक सख़्त कलामी और गाली को सुनकर नर्मी के साथ जवाब देने की ताक़त रखते हों फिर जहां देखें कि शरारत का भय है वहां से चले जाएं और फ़ित्ना तथा फ़साद के मध्य अपने आपको न डालें और जहां देखें कि कोई नेक आदमी उनकी बात को सुनता है उसको नर्मी से समझाएँ। जलसों और मुबाहिसों के अखाड़ों से परहेज़ करें क्योंकि इस तरह फ़ित्ना का भय होता है। धीरे से और उच्च आचरण से अपना काम करते हुए जाएं।"

(बदर 3 अक्तूबर 1907 ई)

इसके बाद सुहैब नासिर छात्र दर्जा सादसा ने "ख़ाना काअबा वक़्फ़ ज़िन्दगी की बुनियाद है" के विषय पर एक तक़रीर की

क़ुरआन करीम में ख़ुदा तआला का आदेश है कि

اِنَّ اَوَّلَ بَیۡتٍ وُّضِعَ لِلنَّاسِ لَلَّذِیۡ بِبَکَّۃَ مُبٰرَکًا وَّ ہُدًی لِّلۡعٰلَمِیۡنَ

(आले इम्रान 97)अर्थात ख़ाना काअबा धरती की वह पहली इमारत है जो तौहीद और अल्लाह तआला के नाम को ऊंचा करने के लिए इसी तरह मोमिनीन की इबादत के लिए बनाई गई है। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी अल्लाह तआला अन्हो ने फ़रमाया कि यह ख़ाना काअबा हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के ज़माना से चला आता है। (तफ़सीर कबीर , पृष्ठ 448) इसी लिए आरम्भ से पवित्र ख़ुदा तआला ने यह आदेश दिया कि प्रत्येक वर्ष सारी धरती के तौहीद के आशिक इसके गिर्द जमा हो कर इसका हज तथा उमरा अदा करें और अल्लाह तआला के आदेशों का पालन करें तथा अपने ज़हनों में ताज़ा करें। इस्लाम में ख़ाना काअबा का महत्त्व तथा बुनियाद प्रमाणिक है। यही कारण है कि इस्लाम के पैग़म्बर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम नबुव्वत के पहले से ही ख़ाना काअबा की पवित्रता और इसके महत्त्व पर विशेष ध्यान था।

मदीना हिजरत के समय मक्का पर आख़िरी निगाह डालते हुए जबकि वह आँखों से ओझल हो रहा था, हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने निहायत मुहब्बत तथा फ़िदाईत के रंग में फ़रमाया कि "हे मक्का तू मुझे सारी धरती की समस्त बस्तियों से अधिक प्यारा है , परन्तु क्या करूँ, तेरे निवासी मुझे यहां रहने नहीं देते।" मक्का से इस क़दर मोहब्बत के इज़्हार का कारण यह था कि एक तरफ़ मक्का आपका मूल वतन था और दूसरी तरफ़ इस शहर में ख़ाना काअबा भी मौजूद था। इस मुहब्बत के कारण नमाज़ के फर्ज़ होने के बाद हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हार्दिक इच्छा थी कि इस्लाम धर्म में अल्लाह तआला की इबादत के समय क़िब्ला ख़ाना कअबा होता। चूँकि ख़ाना काअबा ही रुहानी जस्मानी दृष्टि से मुसलमानों की अगली समस्त तरक्कियों का केन्द्र ठहरा, इसी लिए अल्लाह तआला की हिक्मत ने यह चाहा कि ख़ाना काअबा मुसलमानों की रुहानी शिक्षा तथा तर्बीयत का माध्यम हो तथा इसका विशेष प्रबन्ध किया जाए जो सदैव जारी रहे। मानो ख़ाना काअबा मुसलमानों की रुहानी शिक्षा तथा तर्बीयत का मर्कज़ क़रार दिया गया। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी अल्लाह तआला अन्हो फ़रमाते हैं।

"ख़ाना काअबा क्या है? एक घर है जो ख़ुदा तआला की इबादत के लिए वक़्फ़ है परन्तु स्पष्ट है कि सारी दुनिया के इन्सान ख़ाना काअबा में नहीं जा सकते। अत: जिस तरह ख़ुदा तआला चाहता है कि इब्राहीम अलैहिस्सलाम की नकलें दुनिया में पैदा हों। इसी तरह वह यह भी चाहता है कि तुम ख़ाना काअबा की नकलें बनाओ जिसमें तुम और तुम्हारी औलादें अपनी ज़िन्दगियां धर्म की सेवा के लिए वक़्फ़ करके बैठ जाएं और हक़ीक़त यह है कि जब तक ख़ाना कअबा के प्रतिरूप के बिना दुनिया में धर्म कभी फैल ही नहीं सकता।"

(तफ़सीर कबीर, भाग 2 पृष्ठ 169-169 ज़ेर आयत सूरत अलबक़रा 126)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहेमहुल्लाह तआला ने भी बैतुल्लाह के

शेष पृष्ठ 8 पर

ख़ुत्बः जुमअः

आंहज़रत सल्लल्लाहो के महान बदरी सहाबी

इस्लाम और इस्लाम के संस्थापक के एक निहायत जान कुर्बान करने वाले आशिक़, निहायत दर्जा के मुख़लिस, बेलौस फ़िदाई, उच्च स्तर के वफ़ादार और क़बीला औस के सबसे बड़े रईस

हज़रत सइद बिन मुआज़ रज़ी अल्लाह अन्हों के प्रशंसनीय गुणों का वर्णन।

जंग एहज़ाब के दौरान बनू क़ुरैज़ा की ग़द्दारी और ख़ुदाई तसर्रुफ़ात के अधीन उनकी सज़ा की घटना का विस्तार से वर्णन।

चार मरहूमीन आदरणीया हाजिया रुक़य्या ख़ालिद साहिबा सदर लज्ना इमा उल्लाह घाना आदरणीया सफिया बेगम साहिबा पत्नी आदरणीय शेख़ मुबारक अहमद साहिब मरहूम (मुबल्लिग़ सिल्सिला)

आदरणीय अली अहमद साहिब रिटायर्ड मुअल्लिम वक़्फ़े जदीद और आदरणीया रफ़ीकां बी-बी साहिबा नारोवाल का ज़िक्रे ख़ैर और उनके साथ कुछ अन्य मरहूमीन (आदरणीय नासिर सईद साहिब, आदरणीय ग़ुलाम मुस्तफ़ा साहिब ,डाक्टर पीर मुहम्मद नक़ी उद्दीन साहिब और आदरणीय ज़ुल्फ़िक़ार अहमद दामानक साहिब मुरब्बी सिल्सिला इंडोनेशिया)की भी नमाज़े जनाज़ा ग़ायब।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 10 जुलाई 2020 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक़ इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ
عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

जैसा कि पिछले ख़ुत्बा में वर्णन किया था कि जंग एहज़ाब के बाद बनू क़ुरैज़ा की ग़द्दारी की सज़ा का ख़ुदाई हुक्म आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को हुआ। अत: इनसे जंग हुई और फिर बनू क़ुरैज़ा ने जंग बंदी करके हज़रत सअद रज़ि से फ़ैसला करवाने पर रजामंदी का इज़हार किया। अत: हज़रत सअद रज़ि ने फ़ैसला किया। इस जंग का वर्णन करते हुए हज़रत मुसल्लेह मौऊद रज़ी अल्लाह तआला अन्हो ने एक स्थान पर इस तरह वर्णन किया है कि

''बीस दिनों के बाद मुसलमानों ने सन्तोष की सांस ली' अर्थात जंग एहज़ाब के बाद ''परन्तु अब बनू क़ुरैज़ा का मामला तय होने वाला था। उनकी ग़द्दारी ऐसी नहीं थी कि नज़रअंदाज की जाती। रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने वापस आते ही अपने सहाबा रज़ि से फ़रमाया कि घरों में आराम न करो बल्कि शाम से पहले पहले बनू क़ुरैज़ा के क़िलों तक पहुंच जाओ। और फिर आप रज़ि ने हज़रत अली रज़ि को बनू क़ुरैज़ा के पास भिजवाया कि वह उनसे पूछें कि उन्होंने मुआहिदा के ख़िलाफ़ यह ग़द्दारी क्यों की? बजाय इसके कि बनू क़ुरैज़ा शर्मिंदा होते या माफ़ी मांगते या कोई क्षमा चाहते, उन्होंने हज़रत अली रज़ि और उनके साथियों को बुरा-भला कहना शुरू कर दिया और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आप रज़ि के ख़ानदान की स्त्रियों को गालियां देने लगे और कहा हम नहीं जानते मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम)क्या चीज़ हैं। हमारा उनके साथ कोई मुआहिदा नहीं। हज़रत अली रज़ि उनका यह उत्तर लेकर वापस लौटे तो इतने में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सहाबा रज़ि के साथ यहूद के क़िलों की तरफ़ जा रहे थे। चूँकि यहूद गंदी गालियां दे रहे थे और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बीवियों और बेटियों के बारे में भी गन्दी बातें बोल रहे थे हज़रत अली रज़ि ने इस ख़्याल से कि आपको इन शब्दों के सुनने से कष्ट होगा, निवेदन किया हे रसूलुल्लाह आप रज़ि क्यों कष्ट करते हैं। हम लोग इस लड़ाई के लिए काफ़ी हैं। आप रज़ि वापस तशरीफ़ ले जाएं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मैं समझता हूँ कि वे गालियां दे रहे हैं और तुम यह नहीं चाहते कि मेरे कान में वे गालियां पढ़ें। हज़रत अली रज़ि ने निवेदन किया हाँ हे अल्लाह के रसूल! बात तो यही है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया फिर क्या हुआ अगर वे गालियां देते हैं। मूसा नबी तो उनका अपना था इसको इससे भी अधिक उन्होंने तकलीफ़ें पहुंचाई थीं। यह कहते हुए आप रज़ि यहूद के क़िलों की तरफ़ चले गए परन्तु यहूद दरवाज़े बंद करके क़िला बंद हो गए और मुसलमानों के साथ लड़ाई शुरू कर दी यहां तक कि उनकी औरतें भी लड़ाई में शामिल हुईं। अत: क़िला की दीवार के नीचे कुछ मुसलमान बैठे थे कि एक यहूदी औरत ने ऊपर से पत्थर फेंक कर एक मुसलमान को मार दिया। लेकिन कुछ दिन के घेराव के बाद यहूद ने यह महसूस कर लिया कि वह लम्बा मुक़ाबला नहीं कर सकते। तब उनके सरदारों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से इच्छा की कि वह अबू लुबाबा अन्सारी को, जो उनके दोस्त और औस क़बीला के सरदार थे, उनके पास भिजवाएं ताकि वह उनसे परामर्श कर सकें। आप रज़ि ने अबू लुबाबा को भिजवा दिया। उनसे यहूद ने यह मश्वरा पूछा कि क्या मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इस मांग को कि फ़ैसला मेरे सपुर्द करते हुए तुम हथियार फेंक दो हम यह स्वीकार कर लें?' यहूद ने पूछा। ''अबू लुबाबा ने मुँह से तो कहा 'हाँ' लेकिन अपने गले पर इस तरह हाथ फेरा जिस तरह क़तल की निशानी होती है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उस वक़्त तक अपना कोई फ़ैसला ज़ाहिर नहीं किया था परन्तु अबू लुबाबा ने अपने दिल में यह समझते हुए कि उनके इस जुर्म की सज़ा' जो यहूदियों ने जुर्म किया है इसकी सज़ा ''सिवाए क़तल के और क्या होगी, बग़ैर सोचे समझे इशारा के साथ उनसे एक बात कह दी जो आख़िर उनकी तबाही का कारण हुई' अर्थात बनू क़ुरैज़ा क़बीला की। ''अत: यहूद ने कह दिया कि हम मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का फ़ैसला' मानने को तैयार नहीं। अगर वह आपका फ़ैसला ''मान लेते तो दूसरे यहूदी क़बीलों की तरह उनको अधिक से अधिक यही सज़ा दी जाती कि उनको मदीना से देश निकाला कर दिया जाता परन्तु उनका दुर्भाग्य था। उन्होंने कहा हम मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का फ़ैसला मानने के लिए तैयार नहीं बल्कि हम अपने हलीफ़ क़बीला औस के सरदार सअद बिन मआज़ रज़ि का फ़ैसला मानेंगे। जो फ़ैसला वह करेंगे हमें स्वीकार होगा लेकिन इस वक़्त यहूद में मतभेद हो गया।' आपस में मतभेद हो गया। ''यहूद में से कुछ ने कहा कि हमारी क़ौम ने ग़द्दारी की है' स्पष्ट है ''कि हमने ग़द्दारी की है और मुसलमानों के व्यवहार से साबित होता है कि उनका मज़हब सच्चा है वे लोग अपना मज़हब छोड़ करके इस्लाम में दाख़िल हो गए।' ये जिन्होंने मतभेद किया था। ''एक आदमी अमरो बिन सुअदाई ने जो इस क़ौम के सरदारों में से था अपनी क़ौम को बुरा भला कहा और कहा कि तुमने ग़द्दारी की है कि मुआहिदा तोड़ा है अब या मुसलमान हो जाओ या जिज़्या पर राज़ी हो जाओ। यहूद ने कहा न मुसलमान होंगे न जिज़्या देंगे कि इस से क़तल होना अच्छा है। फिर उनसे उसने कहा मैं तुमसे आज़ाद हूँ।''जब उनको समझाया और नहीं समझे तो उसने कहा फिर मैं तुमसे आज़ाद हूँ। मैं तुम्हारे साथ नहीं। ''और यह कह कर क़िला से निकल कर बाहर चल दिया। जब वह क़िला से बाहर निकल रहा था तो मुसलमानों के एक दस्ता ने जिसके सरदार मुहम्मद बिन मुस्लिमा रज़ि थे उसे देख लिया और उससे पूछा कि वह कौन है? उसने बताया कि मैं अमुक हूँ। इस पर मुहम्मद बिन मुस्लिमा रज़ि ने फ़रमाया।اَللّٰهُمَّ لَا تَحْرِمْنِيْ اِقَالَةَ عَثَرَاتِ الْكِرَامِ۔ अर्थात आप सलामती से चले जाईए और फिर अल्लाह तआला से दुआ की ' हज़रत मुहम्मद बिन मुस्लिमा ने यह दुआ की कि ''इलाही मुझे शरीफ़ों

की ग़लतियों पर पर्दा डालने के नेक काम से कभी वंचित न कीजियो। अर्थात यह आदमी चूँकि अपने काम पर और अपनी क़ौम के काम पर पछताता है तो हमारा भी अख़लाक़ी फ़र्ज़ है कि उसे माफ़ कर दें। इसलिए मैंने उसे गिरफ़्तार नहीं किया और जाने दिया है। ख़ुदा तआला मुझे हमेशा ऐसे ही नेक कामों की तौफ़ीक़ प्रदान करता रहे।' कोई अत्याचार का इरादा नहीं था। "जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इस घटना का इलम हुआ तो आपने मुहम्मद बिन मुस्लिमा की पूछताछ नहीं की' पूछा नहीं कि क्यों तुमने उसको नहीं पकड़ा "कि क्यों इस यहूदी को छोड़ दिया बल्कि उसके काम को सराहा।' आपने उस की इस बात की प्रशंसा की कि तुमने बड़ा अच्छा काम किया" यह .... घटनाएं व्यक्तिगत थी। बनू क़ुरैज़ा बहैसीयत क़ौम अपनी ज़िद पर खड़े रहे।' यद्यपि एक दो घटनाएं ऐसी थीं, कुछ आदमी ऐसे थे जो इससे, बनू क़ुरैज़ा के फ़ैसलों से मतभेद करते थे और चाहते थे कि मुसलमानों से मुआहिदा किया जाए, उनकी बात मानी जाए लेकिन यह व्यक्तिगत घटनाएं थीं। बहैसीयत क़ौम वे इस बात पर ज़िद कर रहे थे और इस बात पर क़ायम रहे कि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को हकम न मानें। "और रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का हुक्म मानने से इन्कार करते हुए सअद रज़ि के फ़ैसला पर ज़ोर देते रहे ।' उन्होंने यह पसन्द नहीं किया कि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के फ़ैसले को मानें और उनको फ़ैसला करने के लिए हक्म के तौर पर निर्धारित कर दें बल्कि उन्होंने कहा कि सअद हमारा फ़ैसला करेगा। "रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भी उनकी इस मांग को मान लिया। सअद रज़ि को जो जंग में ज़ख़्मी हो चुके थे सूचना दी कि तुम्हारा फ़ैसला बनू क़ुरैज़ा स्वीकार करते हैं' इसलिए "आकर फ़ैसला करो। इस परामर्श का ऐलान होते ही औस क़बीला के लोग जो बनू क़ुरैज़ा के देर से हलीफ़ चले आ रहे थे वे सअद रज़ि के पास दौड़ कर गए और उन्होंने बार-बार कहना शुरू किया कि चूँकि ख़ज़रज ने अपने हलीफ़ यहूदियों को हमेशा सज़ा से बचाया है' इसलिए "आज तुम भी अपने हलीफ़ क़बीला के हक़ में फ़ैसला देना। सअद रज़ि ज़ख़्मों के कारण से सवारी पर सवार हो कर बनू क़ुरैज़ा की तरफ़ रवाना हुए और उनकी क़ौम के लोग उनके दाएं बाएं दौड़ते जाते थे और सअद रज़ि से इसरार करते जाते थे कि देखना बनू क़ुरैज़ा के ख़िलाफ़ फ़ैसला न देना। परन्तु सअद रज़ि ने सिर्फ यही जवाब दिया कि जिसके सपुर्द फ़ैसला किया जाता है वह अमानतदार होता है। उसे दयानत से फ़ैसला करना चाहिए। मैं दयानत से फ़ैसला करूँगा।

जब सअद रज़ि यहूद के क़िला के पास पहुंचे जहां एक तरफ़ बनू क़ुरैज़ा क़िला की दीवार से खड़े सअद रज़ि की प्रतीक्षा कर रहे थे और दूसरी तरफ़ मुसलमान बैठे थे तो सअद रज़ि ने पहले अपनी क़ौम से पूछा क्या आप लोग वादा करते हैं कि जो मैं फ़ैसला करूँगा वह आप लोग स्वीकार करेंगे? उन्होंने कहा हाँ। फिर सअद रज़ि ने बनू कुरेज़ा को सम्बोधित करके कहा क्या आप लोग वादा करते हैं कि जो फ़ैसला मैं करूँगा वह आप लोग स्वीकार करेंगे? उन्होंने कहा हाँ। फिर शर्म से दूसरी तरफ़ देखते हुए नीची निगाहों से इस तरफ़ इशारा किया जिधर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तशरीफ़ रखते थे और कहा इधर बैठे हुए लोग भी यह वादा हैं ?" अर्थात आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरफ़ इसलिए नज़र उठा कर नहीं देख सकते थे कि शर्म थी, लज्जा थी लेकिन फ़ैसले के लिए हकम निर्धारित किए गए थे तो पूछना भी ज़रूरी था। इसलिए नज़रें बड़ी नीची करके आप ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरफ़ भी मुँह करके पूछा कि आप भी वादा करते हैं "रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हाँ। इस के बाद आप ने'" जब तीनों पक्षों से वादा ले लिया तो सअद ने "बाइबल के हुक्म के अनुसार फ़ैसला सुनाया। बाइबल में लिखा है

'और जब तू किसी शहर के पास उससे लड़ने के लिए आ पहुंचे तो पहले उससे सुलह का पैग़ाम कर। तब यूं होगा कि अगर वे तुझे जवाब दे कि सुलह स्वीकार है और दरवाज़ा तेरे लिए खोल दे तो सारी ख़ल्क़ जो इस शहर में पाई जाए तुझे ख़िराज देगी और तेरी सेवा करेगी और अगर वे तुझसे सुलह न करे बल्कि तुझसे जंग करे तो तू उसका घेराव कर और जब ख़ुदावंद तेरा ख़ुदा उसे तेरे क़ब्ज़ा में कर दे तो वहां के हर एक मर्द को तलवार की धार से क़तल कर। सिवाए औरतों और लड़कों और जानवरों के और जो कुछ इस शहर में हो उसकी सारी लूट अपने लिए ले और तू अपने दुश्मनों की इस लूट को जो ख़ुदावंद तेरे ख़ुदा ने तुझे दी है खाइयो। इसी तरह से तू इन सब शहरों से जो तुझसे बहुत दूर हैं और उन क़ौमों के शहरों में से नहीं हैं, यही हाल कीजियो। लेकिन इन क़ौमों के शहरों में जिन्हें ख़ुदावंद तेरा ख़ुदा तेरी मीरास कर देता है किसी चीज़ को जो सांस लेती है जीता न छोड़ियो बल्कि तू उनको हर्म कीजियो। حِتِّیاور اَمُوْرِیاور کَنْعَانیاور فَرَزِّیاور حَوِّیاور یَبُوْسِیکو जैसा कि ख़ुदावंद तेरे ख़ुदा ने तुझे हुक्म किया है ताकि वे अपने सारे बुरे कामों के अनुसार जो उन्होंने अपने माबूदों से किए तुमको अमल करना न सिखाएँ और कि तुम ख़ुदावंद अपने ख़ुदा के गुनहगार हो जाओ।"

(इस्तिस्ना अध्याय20 आयत10 से17)

यह बाइबल के शब्द हैं। हज़रत सअद रज़ि ने यह पढ़े और इसके अनुसार फ़ैसला किया। "बाइबल के इस फ़ैसला से ज़ाहिर है कि अगर यहूदी जीत जाते और मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हार जाते तो बाइबल के इस फ़ैसला के अनुसार पहले तो समस्त मुसलमान क़तल कर दिए जाते। मर्द भी और औरतें भी और बच्चे भी और जैसा कि इतिहास से साबित होता है कि यहूदियों का यही इरादा था कि मर्दों, औरतों और बच्चों सबको एकदम क़तल कर दिया जाए लेकिन अगर वह उनसे बड़ी से बड़ी रियाइत करते तब भी किताब इस्तिस्ना के ऊपर वर्णन किए गए फ़ैसला के अनुसार वे उनसे दूर की मुल्कों वाली क़ौमों जैसा सुलूक करते और तमाम मर्दों को क़तल कर देते और औरतों और लड़कों और सामानों को लूट लेते। सअद रज़ि ने जो बनू कुरेज़ा के हलीफ़ थे और उनके दोस्तों में से थे जब देखा कि यहूद ने इस्लामी शरीयत के अनुसार ,जो यक़ीनन जान की हिफ़ाज़त करती ,मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के फ़ैसला को स्वीकार नहीं किया तो उन्होंने वही फ़ैसला यहूद के बारे में किया जो' हज़रत "मूसा ने इस्तिस्ना में पहले से ऐसे अवसरों के लिए कर छोड़ा था। और इस फ़ैसला की ज़िम्मेदारी मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर या मुसलमानों पर नहीं" यह तो उनकी अपनी किताब के अनुसार फ़ैसला था "बल्कि मूसा पर और तौरात पर और उन यहूदियों पर है जिन्होंने ग़ैर क़ौमों के साथ हज़ारों साल इस तरह मामला किया था और जिनको मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के रहम के लिए बुलाया गया तो उन्होंने इन्कार कर दिया और कहा हम मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बात मानने के लिए तैयार नहीं। हम सअद रज़ि ' हज़रत सअद रज़ि "की बात मानेंगे। जब सअद रज़ि ने मूसा के फ़ैसला के अनुसार फ़ैसला दिया तो' हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि लिखते हैं कि "आज ईसाई दुनिया शोर मचाती है कि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अत्याचार किया क्या ईसाई लेखक इस बात को नहीं देखते कि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने किसी दूसरे अवसर पर क्यों अत्याचार न किया?' बाक़ी तो कहीं अत्याचार नज़र नहीं आता। "सैंकड़ों बार दुश्मन ने मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के रहम पर अपने आपको छोड़ा और हर बार मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनको माफ़ कर दिया। यह एक ही अवसर है कि दुश्मन ने इसरार किया कि हम मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के फ़ैसला को नहीं मानेंगे बल्कि अमुक दूसरे आदमी के फ़ैसला को मानेंगे और उस व्यक्ति ने मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से पहले वादा ले लिया कि जो मैं फ़ैसला करूँगा इसे आप मानेंगे।" जैसा कि तारीख़ से ज़ाहिर है इक़रार आप से भी लिया गया था" उसके बाद उसने फ़ैसला किया बल्कि उसने फ़ैसला नहीं किया। उसने मूसा का फ़ैसला दोहरा दिया जिसकी उम्मत में से होने के यहूद मुद्दई थे। अत: अगर किसी ने अत्याचार किया तो यहूद ने अपनी जानों पर अत्याचार किया जिन्होंने मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का फ़ैसला मानने से इन्कार कर दिया। अगर किसी ने अत्याचार किया तो मूसा ने अत्याचार किया जिन्होंने घेरे हुए दुश्मन के बारे में तौरात में ख़ुदा से हुक्म पाकर यही शिक्षा दी थी। अगर ये अत्याचार था तो उन ईसाई मुसन्निफ़ों को चाहिए कि मूसा को ज़ालिम क़रार दें बल्कि मूसा के ख़ुदा को ज़ालिम क़रार दें जिसने यह शिक्षा तौरात में दी है।

एहज़ाब की जंग के ख़ातमा के बाद रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया। आज से मुशरिक हम पर हमला नहीं करेंगे। अब इस्लाम ख़ुद जवाब देगा और उन जातियों पर जिन्होंने हम पर हमले किए थे अब हम चढ़ाई करेंगे अत: ऐसा ही हुआ। एहज़ाब की जंग में भला कुफ़्फ़ार का नुक़्सान ही क्या हुआ था? कुछ आदमी मारे गए थे। वे दूसरे साल फिर दोबारा तैयारी करके आ सकते थे। बीस हज़ार के स्थान पर वे चालीस या पच्चास हज़ार का लश्कर भी ला

सकते थे बल्कि अगर वे और अधिक प्रबन्ध करते तो लाख डेढ़ का लश्कर लाना भी उनके लिए कोई मुश्किल नहीं था परन्तु इक्कीस साल की निरन्तर कोशिश के बाद कुफ़्फ़ार के दिलों को महसूस हो गया था कि ख़ुदा मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ है। उनके बुत झूठे हैं और दुनिया का पैदा करने वाला एक ही ख़ुदा है। उनके जिस्म सही सलामत थे परन्तु उनके दिल टूट चुके थे।" अर्थात काफ़िरों के "ज़ाहिर में वे अपने बुतों के आगे सिज्दा करते हुए नज़र आते थे परन्तु उनके दिलों में ला इलाहा इल्ल्लाह की आवाज़ें उठ रही थीं।"

(दीबाचा तफ़सीरुल क़ुरआन, अन्वारुल-उलूम भाग 20 पृष्ठ 282-287)

हज़रत अब्बू सईद ख़ुदरी रज़ी अल्लाह तआला अन्हो से रिवायत है कि कुछ लोग हज़रत सअद बिन मआज़ रज़ि के फ़ैसला को स्वीकार करने की शर्त पर क़िला से उतर आए। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत सअद रज़ि को बुला भेजा तो वह एक गधे पर सवार हो कर आए। जब मस्जिद के क़रीब पहुंचे तो नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तुम अपने में से बेहतर के स्वागत के लिए उठो या फ़रमाया अपने सरदार के स्वागत के लिए उठो। फिर आप रज़ि ने फ़रमाया सअद रज़ि ये लोग आपके फ़ैसला पर उतरे हैं। उन्होंने कहा फिर मैं उनके बारे में यह फ़ैसला करता हूँ कि उनमें से जो लड़ने वाले थे उन्हें क़तल कर दिया जाए और उनके घर वाले क़ैद कर लिए जाएं। आप रज़ि ने फ़रमाया तुमने इलाही इच्छा के अनुसार फ़ैसला किया है या फ़रमाया तुमने शाहाना फ़ैसला किया है अर्थात तुमने बादशाहों जैसा फ़ैसला किया। यह बुख़ारी की रिवायत है।

(सही बुख़ारी किताब मनाक़िब अल-अनसार बाब मनाक़िब सअद बिन मआज़ हदीस 3804)

इसकी जो कुछ और अधिक बातें हैं हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि ने भी विस्तार से वर्णन की हैं। कुछ बातें मैं यहां वर्णन कर देता हूँ। वह लिखते हैं बनूक़ुरैज़ा के सम्बन्ध में ही कि आख़िर तीस (बीस) दिन के घेराव के बाद यह हतभागे यहूद एक ऐसे आदमी को हकम मान कर अपने क़िलों से उतरने पर राज़ी हुए जो बावजूद उनका हलीफ़ होने के उनकी कार्यवाईयों के कारण से उनके लिए अपने दिल में कोई रहम नहीं पाता था और जो यद्यपि न्याय की मूर्ति था परन्तु उसके दिल में रहमतुल्लिल आलमीन जैसी दया और नर्मी नहीं थी। विस्तार इस बात का यह है कि क़बीला औस बनू कुरैज़ा का पुराना हलीफ़ था और उस ज़माना में इस क़बीला के रईस सअद बिन मआज़ रज़ि थे जो जंग ख़ंदक़ में ज़ख़्मी हो क़र अब मस्जिद के सेहन में इलाज करवा रहे थे। इस पुरानी जत्थादारी का ख़्याल करते हुए बनू कुरैज़ा ने कहा कि हम सअद बिन मआज़ रज़ि को अपना हकम मानते हैं। जो फ़ैसला भी वह हमारे बारे में करें वह हमें स्वीकार होगा। लेकिन यहूद में कुछ ऐसे लोग भी थे (जैसा कि पहले भी वर्णन हो चुका है जो अपने इस क़ौमी फ़ैसला को सही नहीं समझते थे और अपने आपको मुजरिम यक़ीन करते थे और दिल में इस्लाम की सच्चाई के मानने वाले हो चुके थे। ऐसे लोगों में से कुछ आदमी जिनकी संख्या तारीख़ी रिवायतों में तीन वर्णन हुई है। अपने दिल की बड़ी ख़ुशी से इस्लाम स्वीकार करके आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मानने वालों में शामिल हो गए। एक और व्यक्ति था वह मुसलमान तो नहीं हुआ परन्तु वह अपनी क़ौम की ग़द्दारी पर इस क़दर शर्मिंदा था कि जब बनूक़ुरैज़ा ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ जंग करने की ठानी तो वह यह कहता हुआ कि मेरी क़ौम ने मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सख़्त ग़द्दारी की है मैं इस ग़द्दारी में शामिल नहीं हो सकता, मदीना छोड़कर कहीं बाहर चला गया था परन्तु बाक़ी क़ौम आख़िर तक अपनी ज़िद पर क़ायम रही और सअद रज़ि को अपना पंच बनाने पर ज़ोर दिया। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भी उसे स्वीकार फ़रमाया (जैसा कि वर्णन हुआ है)इसके बाद आप रज़ि ने कुछ अन्सारी सहाबियों को सअद रज़ि के लाने के लिए रवाना फ़रमाया। सअद रज़ि आए और रास्ता में उनके क़बीले के कुछ लोगों ने इसरार किया और बार-बार यह निवेदन किया कि क़ुरैज़ा हमारे हलीफ़ हैं इसलिए उनका ध्यान रखना। जिस तरह ख़ज़रज ने अपने हलीफ़ क़बीला बनू क़ैनक़ाअ के साथ नर्मी की थी तुम भी क़ुरैज़ा से रियाइत का मामला करना और उन्हें सख़्त सज़ा न देना। सअद बिन मआज़ रज़ि पहले तो ख़ामोशी के साथ उनकी बातें सुनते रहे लेकिन जब उनकी तरफ़ से अधिक ज़ोर होने लगा तो सअद रज़ि ने कहा कि यह वह वक़्त है कि सअद रज़ि उस वक़्त हक़ तथा न्याय के मामला में किसी मलामत करने वाले की मलामत की पर्वा नहीं कर सकता। जब सअद रज़ि का यह जवाब सुना तो लोग ख़ामोश हो गए।

बहरहाल जब सअद रज़ि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के क़रीब पहुंचे तो आप ने सहाबा रज़ि से फ़रमाया कि अपने रईस के लिए उठो और सवारी से नीचे उतरने में उन्हें मदद दो। जब सअद रज़ि सवारी से नीचे उतरे तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरफ़ आगे बढ़े। हज़रत सअद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के क़रीब आए तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनसे सम्बोधित हो कर फ़रमाया सअद! बनू क़ुरैज़ा ने तुम्हें हकम माना है और उन के बारे में तुम जो फ़ैसला करो उन्हें स्वीकार होगा। इस पर सअद रज़ि ने अपने क़बीले औस के लोगों की तरफ़ नज़र उठा कर कहा कि क्या तुम ख़ुदा को हाज़िर नाज़िर जान कर यह पक्का वादा करते हो कि तुम बहरहाल इस फ़ैसला पर अनुकरण करने के पाबन्द होगे जो मैं बनू क़ुरैज़ा के बारे में करूँ? लोगों ने कहा हाँ हम वादा करते हैं। पहले भी वर्णन हो चुका है। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ि ने जो वर्णन फ़रमाया है इसमें भी वर्णन हो चुका है। बहरहाल फिर सअद रज़ि ने इस तरफ़ इशारा करते हुए जहां आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तशरीफ़ रखते थे कहा कि वह साहिब जो..। (उन्होंने इस तरह यहां लिखा है कि वह जो) यहां तशरीफ़ रखते हैं क्या वह भी ऐसा ही वादा करते हैं कि वह बहरहाल मेरे फ़ैसला के अनुसार अनुकरण करने के पाबन्द होंगे। इस पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मैं वादा करता हूँ।

इस वादा लने के बाद सअद रज़ि ने अपना फ़ैसला सुनाया जो यह था कि बनू क़ुरैज़ा के जंग लड़ने वाले अर्थात जंगजू लोग क़तल कर दिए जाएं और उनकी औरतें और बच्चे क़ैद कर लिए जाएं और उन के माल मुसलमानों में बांट दिए जाएं। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह फ़ैसला सुना तो फ़रमाया कि तुम्हारा यह फ़ैसला एक ख़ुदाई तक़दीर है जो टल नहीं सकती और उन शब्दों से आप रज़ि का यह अभिप्राय था कि बनूक़ुरैज़ा के बारे में यह फ़ैसला ऐसे हालात में हुआ है कि इसमें साफ़ तौर पर ख़ुदाई प्रभाव काम करता हुआ नज़र आता है और इसलिए आप रज़ि की दया की भावना उसे रोक नहीं सकती। और यह वास्तव में ठीक था क्योंकि बनूक़ुरैज़ा का अबु लुबाबा को अपने मश्वरा के लिए बुलाना और अबु लुबाबा के मुँह से एक ऐसी बात निकल जाना जो सरासर निराधार थी और बनूक़ुरैज़ा का आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को हकम मानने से इन्कार करना और इस ख़्याल से कि क़बीला औस के लोग हमारे हलीफ़ हैं और हम से रियाइत का मामला करेंगे सअद बिन मआज़ रज़ि रईस औस को अपना हकम निर्धारित करना, फिर सअद रज़ि का हक़ तथा न्याय के रास्ते में इतना मज़बूत हो जाना कि कबीला और जत्थादारी का एहसास दिल से बिलकुल दूर हो जाए और अन्त में सअद रज़ि का अपने फ़ैसला के ऐलान से पहले आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से इस बात का मज़बूत वादा ले लेना कि बहरहाल इस फ़ैसला के अनुसार अनुकरण होगा। ये सारी बातें इत्तिफ़ाक़ी नहीं हो सकतीं और निसन्देह इनकी तह में ख़ुदाई तक़दीर अपना काम कर रही थी और यह फ़ैसला ख़ुदा तआला का था न कि सअद का।

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि लिखते हैं कि ऐसा मालूम होता है कि बनूक़ुरैज़ा का वादा तोड़ना और ग़द्दारी और बग़ावत और फ़ित्ना व फ़साद और क़त्ल करने के कारण से ख़ुदाई अदालत से यह फ़ैसला हो चुका था कि उनके जंग करने वाले लोगों को दुनिया से मिटा दिया जाए। अत: आरम्भ में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इस जंग के बारे में ग़ैबी तहरीक होना भी यही प्रकट करता है कि यह एक ख़ुदाई तक़दीर थी परन्तु ख़ुदा को यह स्वीकार न था कि उसके रसूल के द्वारा यह फ़ैसला जारी हो और इस लिए उसने निहायत पेच दरपेच ग़ैबी

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

कि अब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इसमें बिल्कुल दख़ल नहीं दे सकते थे क्योंकि आप रज़ि वादा फ़र्मा चुके थे कि आप रज़ि बहरहाल इस फ़ैसला के पाबन्द रहेंगे और फिर चूँकि इस फ़ैसला का प्रभाव भी सिर्फ आप रज़ि की ज़ात पर नहीं पड़ता था बल्कि समस्त मुसलमानों पर पड़ता था इसलिए आप रज़ि अपना यह हक़ नहीं समझते थे कि अपनी राय से चाहे वह कैसी ही क्षमा और रहम की तरफ़ झुकी हो इस फ़ैसला को बदल दें। यही ख़ुदाई तसर्रुफ़ था जिस की ताक़त से प्रभावित हो कर आप रज़ि के मुँह से अपने आप ये शब्द निकले कि قَدْ حَكَمْتَ بِحُكْمِ اللّٰهِ अर्थात हे सअद तुम्हारा यह फ़ैसला तो ख़ुदाई तक़दीर मालूम होती है जिसको बदलने की किसी को ताक़त नहीं।

ये शब्द कह कर आप रज़ि ख़ामोशी से वहां से उठे और शहर की तरफ़ चले आए और उस वक़्त आप रज़ि का दिल इस ख़्याल से दर्द मंद हो रहा था कि एक क़ौम जिसके ईमान लाने की आप रज़ि के दिल में बड़ी इच्छा थी अपनी बुराइयों के कारण से ईमान से वंचित रह कर ख़ुदाई कहर तथा प्रकोप का निशाना बन रही है और शायद इसी अवसर पर आप रज़ि ने यह हसरत भरे शब्द फ़रमाए कि अगर यहूद में से मुझ पर दस आदमी अर्थात दस प्रभाव रखने वाले आदमी भी ईमान ले आते तो मैं ख़ुदा से उम्मीद रखता कि यह सारी क़ौम मुझे मान लेती और ख़ुदाई अज़ाब से बच जाती। बहरहाल वहां से उठते हुए आप रज़ि ने यह हुक्म दिया कि बनू क़ुरैज़ा के मर्दों और औरतों और बच्चों को अलग अलग कर दिया जाए। अत: दोनों गिरोहों को अलग अलग करके मदीना में लाया गया और शहर में दो अलग अलग मकानों में जमा कर दिया गया और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हुक्म के अधीन सहाबा ने जिनमें से शायद कई लोग ख़ुद भूके रहे होंगे बनूक़ुरैज़ा के खाने के लिए ढेरों ढेर फल मुहय्या किया और लिखा है कि यहूदी लोग रात-भर फल खाने में व्यस्त रहे। दूसरे दिन सुबह को सअद बिन मआज़ रज़ि के फ़ैसला को लागू होना था। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कुछ चुस्त आदमी इसकाम को पूरा करने के लिए निर्धारित फ़र्मा दिए और ख़ुद भी क़रीब ही एक जगह में तशरीफ़ फ़र्मा हो गए ताकि अगर फ़ैसला के लागू करने के दौरान में कोई ऐसी बात पैदा हो जिसमें आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हिदायत की ज़रूरत हो तो आप बिना किसी देरी के हिदायत दे सकें। इसी तरह यह भी कि अगर किसी मुजरिम के बारे में किसी आदमी की तरफ़ से रहम की अपील हो तो इसमें आप फ़ौरन फ़ैसला दे सकें क्योंकि यद्यपि सअद के फ़ैसला की अपील अदालती रंग में आप रज़ि के सामने पेश नहीं हो सकती थी परन्तु एक बादशाह या सदर जमहूरीयत की हैसियत से आप रज़ि किसी आदमी के बारे में किसी ख़ास वजह के कारण रहम की अपील ज़रूर सुन सकते थे। बहरहाल आप रज़ि ने रहम के कारण यह भी हुक्म फ़रमाया कि मुजरिमों को एक-एक करके अलग-अलग क़त्ल किया जाए। अर्थात एक के क़तल के वक़्त दूसरा मुजरिम पास मौजूद न हो। अत: एक-एक मुजरिम को अलग अलग लाया गया और सअद बिन मआज़ रज़ि के फ़ैसला के अनुसार उनको क़तल किया गया।

बनू क़ुरैज़ा की घटना के बारे में कुछ ग़ैर मुस्लिम इतिहासकार बहुत बुरे तरीका पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ख़िलाफ़ हमले करते हैं या उन्होंने हमले किए। और कम से कम चार-सौ यहूदियों की सज़ाए क़तल की वजह से आप रज़ि को नऊज़ बिल्लाह ज़ालिम और कट्टर हाकिम के रूप में पेश किया जाता है लेकिन हमारे एक अनुसंधान करने वाले ने यह भी तहक़ीक़ की है कि जो असल संख्या है वह सोला सतारह बनती है लेकिन बहरहाल यह तहक़ीक़ वाली बात है। अभी भी इस पर तहक़ीक़ हो सकती है। किसी ने संख्या सौ लिखी है। चार-सौ लिखी है। किसी ने अधिक लिखी है। किसी ने हज़ार लिखी है। नौ सौ लिखी है। बहरहाल क्योंकि निर्धारित संख्या नहीं है इसलिए इस पर बेहस हो सकती है। बहरहाल अगर चार सौ भी है तो इस आरोप की आधार केवल धार्मिक द्वेष है जिससे जहां तक कम से कम इस्लाम और इस्लाम के संस्थापक आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का सम्बन्ध है बहुत से पश्चमी रोशनी में पले बढ़े मुर्ख़ भी आज़ाद नहीं हो सके। यही आरोप लगाते हैं। तो हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि लिखते हैं कि इस आरोप के जवाब में पहले तो यह बात याद रखनी चाहिए कि बनू क़ुरैज़ा के बारे में जिस फ़ैसला को ज़ालिमाना कहा जाता है वह सअद बिन मआज़ रज़ि का फ़ैसला था, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का हरगिज़ नहीं था। और जब वह आप रज़ि का फ़ैसला ही नहीं था तो उसके कारण से आप रज़ि पर एतराज़ नहीं किया जा सकता। दूसरा यह कि फ़ैसला सम्मुख आने वाले हालात के अनुसार हरगिज़ ग़लत और ज़ालिमाना नहीं था। तृतीय इस वादा के कारण से जो सअद रज़ि ने फ़ैसले के ऐलान से पहले आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से लिया था आप रज़ि उस बात के पाबन्द थे कि बहरहाल उसके अनुसार अनुकरण करते। चतुर्थ यह कि ख़ुद मुजरिमों ने इस फ़ैसले को स्वीकार किया और इस पर एतराज़ नहीं किया और उसे अपने लिए एक ख़ुदाई तक़दीर समझा। तो इस अवस्था में आप रज़ि का यह काम नहीं था कि ख़्वाह-मख़ाह इसमें दख़ल देने के लिए खड़े हो जाते। सअद रज़ि के फ़ैसले के बाद इस मामले के साथ आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का सम्बन्ध केवल इतना था कि आप रज़ि अपनी हुकूमत के निज़ाम के अधीन इस फ़ैसले को उत्तम रूप से जारी फ़र्मा दें और यह बताया जा चुका है कि आप रज़ि ने उसे ऐसे रंग में जारी फ़रमाया कि जो रहमत तथा शफ़क़त का बेहतरीन उदाहरण समझा जा सकता है। अर्थात जब तक तो ये लोग फ़ैसले के लागू होने से पहले क़ैद में रहे आप रज़ि ने उनकी रिहाइश और ख़ुराक का बेहतर से बेहतर प्रबन्ध फ़रमाया और जब उन पर सअद रज़ि का फ़ैसला जारी किया जाने लगा तो आप रज़ि ने ऐसे रंग में जारी किया कि वे मुजरिमों के लिए कम से कम कष्ट का कारण था। अर्थात अव्वल तो उनकी भावनाओं का ख़्याल रखते हुए आप रज़ि ने यह हुक्म दिया कि एक मुजरिम के क़तल के वक़्त कोई दूसरा मुजरिम सामने न हो बल्कि तारीख़ से पता लगता है कि जिन लोगों को मक़तल में लाया जाता था उनको उस वक़्त तक इलम नहीं होता था कि हम कहाँ जा रहे हैं जब तक वह ठीक मक़तल में न पहुंच जाते थे। इसके इलावा जिस शख़्स के बारे में भी आप रज़ि के सामने रहम की अपील पेश हुई आप रज़ि ने उसे फ़ौरन स्वीकार कर लिया और न केवल ऐसे लोगों की जान बख़्शी बल्कि उनके बीवी बच्चों और माल इत्यादि के बारे में भी हुक्म दे दिया कि उन्हें वापस दे दिए जाएं। उनका सब कुछ , माल भी लौटा दिया। इससे बढ़कर एक मुजरिम के साथ रहमत तथा दया का सुलूक क्या हो सकता है? अत: न केवल यह कि बनू क़ुरैज़ा की घटना के बारे में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर हरगिज़ कोई एतराज़ नहीं हो सकता बल्कि सच्चाई यह है कि यह घटना आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के उच्च आचरण और उत्तम प्रबन्ध और आपके फ़ित्री रहम का एक स्पष्ट सबूत है।

बे-शक अपनी ज़ात में सअद रज़ि का फ़ैसला एक सख़्त फ़ैसला था और इन्सानी फितरत को ज़ाहिर में इससे एक सदमा महसूस होता है परन्तु सवाल यह है कि क्या इसके बिना कोई और रास्ता खुला था जिसे धारण किया जाता। बनू क़ुरैज़ा के बारे में सअद रज़ि का फ़ैसला जैसा कि हमने कहा यद्यपि अपनी ज़ात में बड़ा सख़्त है परन्तु वह हालात की मजबूरी थी और हालात की मजबूरी का एक अनिवार्य नतीजा था जिसके बिना कोई चारा नहीं था। यही कारण है कि मार्गो लैस (Margulis) जैसा मुर्ख़ भी जो हरगिज़ इस्लाम के दोस्तों में से नहीं है इस अवसर पर इस बात के स्वीकार करने पर विवश हुआ कि सअद रज़ि का फ़ैसला हालात की मजबूरी पर आधारित था जिसके बिना कोई उपाय नहीं था। अत: वह लिखते हैं कि जंग एहज़ाब का हमला जिसके बारे में मुहम्मद साहिब (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम)का यह दावा था कि वह केवल ख़ुदाई प्रभावों के अधीन हुआ वह बनू नज़ीर ही की भड़काने वाली कोशिशों का नतीजा था या कम से कम यह समझा जाता था कि वह उनकी कोशिशों का नतीजा है और बनू नज़ीर वे थे जिन्हें मुहम्मद साहिब (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने सिर्फ देश निकाला देने पर इकतिफ़ा किया था। अब प्रश्न यह था कि क्या मुहम्मद साहिब सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बनू कुरैज़ा को भी देश निकाला देकर अपने ख़िलाफ़ जोश

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अ: 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

फैलाने वाली कोशिशें करने वालों की संख्या और ताक़त में वृद्धि कर दें? दूसरी तरफ़ वह क़ौम मदीना में भी नहीं रहने दी जा सकती थी जिसने इस तरह स्पष्ट रूप से हमला करने वालों का साथ दिया था। उनका देश निकाला देना असुरक्षित था परन्तु उनका मदीना में रहना भी कम ख़तरनाक न था। अत: इस फ़ैसला के बिना कोई उपाय न था कि उनके क़तल का हुक्म दिया जाता।'

यह मार्गोलैस लिख रहा है। "अत: सअद रज़ि का फ़ैसला बिल्कुल न्यायपूर्ण और अदल एवं इन्साफ़ के नियमों के बिल्कुल अनुसार था और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने वादा के कारण इस फ़ैसले के बारे में रहम के पहलू को काम में नहीं ला सकते थे सिवाए कुछ लोगों के और इसके लिए आपने हर संभव कोशिश की जिन्होंने रहम की अपील की। उमूमी फ़ैसला नहीं दे सकते थे। परन्तु मालूम होता है कि यहूद ने इस शर्म से कि उन्होंने आपको जज मानने से इन्कार कर दिया था आपकी तरफ़ रहम की अपील की अवस्था में अधिक रुजू नहीं किया। सिर्फ कुछ एक ने किया और ज़ाहिर है कि बिना अपील होने के आप रज़ि रहम नहीं कर सकते थे क्योंकि जो बाग़ी अपने जुर्म पर लज्जा का इज़हार भी नहीं करता उसे अपने आप छोड़ देना सयासी तौर पर निहायत ख़तरनाक नतीजे पैदा कर सकता है।

एक और बात याद रखनी ज़रूरी है कि जो मुआहिदा आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और यहूद के मध्य आरम्भ में हुआ था उसकी शर्तों में से एक शर्त ये भी थी कि अगर यहूद के बारे में कोई बात समझाने की पैदा होगा तो इसका फ़ैसला ख़ुद उन्हीं की शरीयत के अधीन किया जाएगा अर्थात यहूद की शरीयत के अनुसार। अत: तारीख़ से पता लगता है कि इस मुआहिदा के अधीन आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हमेशा यहूद के बारे में शरीयत मूसवी के अनुसार फ़ैसला फ़रमाया करते थे। अब हम तौरात पर निगाह डालते हैं तो वहां इस किस्म के जुर्म की सज़ा जिसके करने वाले बनूक़ुरैज़ा हुए ठीक वही लिखी हुई पाते हैं जो सअद बिन मआज़ रज़ि ने बनू क़ुरैज़ा पर जारी की।

(उद्धरित सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन लेखक हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि पृष्ठ 599 से 611)

बहरहाल बनू क़ुरैज़ा के मामले के बारे में हज़रत सअद बिन मआज़ रज़ि का जहां तक उनसे सम्बन्ध था उसकी उतनी ही तफ़सील यहां काफ़ी है। हज़रत सअद बिन मआज़ रज़ि के वर्णन का कुछ हिस्सा बाक़ी रह गया है जो इन शा अल्लाह तआला बाद में वर्णन करूँगा।

अब मैं कुछ वफ़ात पाने वालों का वर्णन करना चाहता हूँ जिनकी पिछले दिनों में वफ़ात हुई है और इन शा अल्लाह नमाज़ जुमा के बाद उनका जनाज़ा ग़ायब भी पढ़ाऊंगा।

पहला वर्णन है आदरणीया हाजीया रुक़य्या ख़ालिद साहिबा जो सदर लज्ना इमा अल्लाह घाना थीं। 30 जून को 65 साल की उम्र में वफ़ात पा गईं। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन। उनको गर्भाशय का कैंसर (uterine cancer) हुआ था। इसके बाद यह recover भी कर गई थीं और अल्लाह तआला ने उनको सेहत प्रदान की लेकिन इस साल मई में दोबारा उनकी सेहत गिरनी शुरू हो गई। अचानक दोबारा हमला हुआ और कुछ समय हस्पताल में बीमार रहने के बाद 30 जून को उनकी वफ़ात हो गई। हाजीया रुक़य्या ख़ालिद साहिबा घाना के उत्तरी इलाक़ा वा (Wa) में अप्रैल 1955 ई में एक अहमदी घराने में पैदा हुई थीं। उनके पिता अल्हाज ख़ालिद सालेह साहिब मरहूम वा (Wa) के निकट एक गांव में इमाम थे जहां अक्सर लोग बुत की पूजा करने वाले थे। उन्होंने बुतपरस्त लोगों में तब्लीग़ करके अहमदियत क़ायम की थी। मरहूमा का बचपन वा (Wa) में ही गुज़रा। एक सुलझी हुई, सलीक़ा वाली और उसूल पसन्द औरत थीं। पेशे के ऐतबार से स्वर्गीया एक टीचर थीं और अपने प्रोफ़ैशनल लोगों और जमाअत में भी दूसरों के लिए एक उदाहरण थीं। नौकरी से रिटायरमैंट के बाद बुस्ताने अहमद में अहमदिया इंटरनैशनल स्कूल की हैड मिस्टरस के तौर पर सेवा कर रही थीं। बच्चों की शिक्षा तथा तर्बीयत में उनको एक ख़ास लगाव था। बहुत सारे बच्चों की शिक्षा के खर्चे बर्दाश्त किया करती थीं और कई बच्चों को अपने घर रखकर बिना किसी पैसे के पढ़ाया करती थी। 2017 ई में उनको सदर लजना इमा उल्लाह निर्धारित किया गया था और बड़ी ख़ूबी से उन्होंने अपनी सदारत का समय, जितने साल भी यह रहीं, बीमारी के बावजूद पूरा किया। और वफ़ात के वक़्त तक बहैसीयत सदर लजना घाना काम जारी रखा। विभिन्न प्रोग्राम बनाती रहीं। आजकल Covid के कारण से जो पाबंदियां लगी हुई हैं उसके बावजूद इंटरनैट इत्यादि पर उन्होंने तर्बीयत के प्रोग्राम जारी रखे और लजना की तर्बीयत का काम करती रहीं। नमाज़ों की पाबन्द थीं। निहायत शौक़ से नेकियां करने वाली थीं। तहज्जुद अदा करने वाली थीं। बाक़ायदगी से चंदा अदा करने वाली औरत थीं। मरहूमा मूसिया भी थीं। ख़िलाफ़त से उनका बड़ा सम्बन्ध था। पीछे रहने वालों में दो बेटे और एक बेटी और चार पोते पोतियां शामिल हैं। अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए और दर्जात बुलंद फ़रमाए और उनकी नस्लों को भी उनकी नेकियां जारी रखने की तौफ़ीक़ प्रदान करे।

दूसरा जनाज़ा जो आज होगा जिनका वर्णन करना चाहता हूँ वह आदरणीया सफ़िया बेगम साहिबा पत्नी आदरणीय शेख़ मुबारक अहमद साहिब मरहूम भूतपूर्व मुबल्लिग़ सिल्सिला अफ़्रीक़ा इंग्लिस्तान और अमरीका हैं। यह 27 जून को 93 साल की उम्र में वफ़ात पा गईं। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन। आप हज़रत क़ाज़ी अब्दुस्सलाम भट्टी साहिब और आदरणीया मुबारका बेगम साहिबा के यहाँ अक्तूबर1926 ई में पैदा हुई थीं। आप हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबा हज़रत क़ाज़ी अब्दुर्रहीम साहिब रज़ि की पोती और हज़रत क़ाज़ी ज़िया उद्दीन साहिब रज़ि की पड़पोती थीं। कई ख़ूबियों की मालिक, दुआ करने वाली बुज़ुर्ग औरत थीं। ख़िलाफ़त से निश्छल मुहब्बत का सम्बन्ध था जो कम देखने में मिलता है। उन्होंने अपनी औलाद बल्कि औलाद की औलाद में भी यह सम्बन्ध पैदा किया। और यह भी कि किस तरह जारी रखना है। मरहूमा मूसिया थीं। शेख़ मुबारक अहमद साहिब से उनकी यह दूसरी शादी थी जिनसे उनकी एक बेटी पैदा हुई और पहले पति से भी औलाद थी। पहले पति उनके जो थे उनका नाम नसीर अहमद भट्टी साहिब था। बहरहाल शेख़-साहिब का विभिन्न देशों में सेवा का जो समय था इसमें उन्होंने बड़ी वफ़ा से उनके साथ ज़िन्दगी गुज़ारी। पीछे रहने वालों में शेख़-साहिब की पहली पत्नी से एक बेटी के अतिरिक्त उनकी अपनी औलाद में दो बेटियां और तीन बेटे शामिल हैं। आपके एक बेटे फ़हीम अहमद भट्टी साहिब यहां हमारे दफ़्तर प्राईवेट सैक्रेटरी में बतौर रज़ाकार सेवा कर रहे हैं। एक पोते सुबूर भट्टी मुरब्बी सिल्सिला हैं। वकालत तिबशीर यूके में काम कर रहे हैं। एक पोते अहमद फ़वाद भट्टी वक़्फ़ ज़िन्दगी हैं जो बतौर टीचर अहमदिया कॉलेज कानू (Kano) में सेवा की तौफ़ीक़ पा रहे हैं। एक पोते ख़लीक़ भट्टी भी शिक्षा पूरी करके वक़्फ़ करके अब रिव्यू आफ़ रेलीजिंज़ में सेवा कर रहे हैं। उनके एक पोते नबील भट्टी हैं जो दो साल पहले बहुत बीमार हो गए थे। लगभग मरने की निकट थे। उनके लिए उन्होंने बहुत दुआएं की और अल्लाह तआला ने उन्हें फिर उस बच्चे की शिफ़ा के बारे में बता भी दिया और अल्लाह तआला ने इसको शिफ़ा भी प्रदान फ़रमाई लेकिन बहरहाल अभी भी नबील भट्टी साहिब को इस बीमारी की वजह से छोटी छोटी कुछ परेशानियां हैं। अल्लाह तआला उनको पूर्ण शिफ़ा भी प्रदान फ़रमाए और सफ़िया बेगम साहिबा ने उनके लिए जो दुआएं की हुई हैं वे स्वीकार फ़रमाए। यह भी वक़्फ़ में शामिल है। अल्लाह तआला उसे भी जमाअत का मुफ़ीद वजूद बनाए और इसको भी और इस की औलाद को भी धर्म का सेवक बनाए।

उनकी बेटी फ़रीदा शेख़ साहिबा वर्णन करती हैं कि हमारी अम्मी को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से बहुत मुहब्बत थी। हर वक़्त उनकी तस्वीर की तरफ़ इशारा करके बताती रहती थीं कि उनकी वजह से हमें सब कुछ मिला है और सब बरकतें उन्हीं की हैं। फिर इसी तरह अफ़्रीकन अम्रीकन बहनों से भी उनको एक विशेष सम्बन्ध था। इसका बहुत ख़्याल रखती थीं। उनमें से अक्सर का लगभग हर-

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अगर तुम चाहते हो कि तुम्हें दोनों दुनिया की फत्ह हासिल हो और लोगों के दिलों पर फत्ह पाओ तो पवित्रता धारण करो, और अपनी बात सुनो, और दूसरों को अपने उच्च आचरण का उदाहरण प्रस्तुत करो यहां तक कि सफल हो जाओगे।"

तालिबे दुआ

धानू शेरपा

सैक्रेट्री जमाअत अहमदिया देवदमतांग (सिक्कम)

रोज़ आना जाना रहता था और घर में बे-तकल्लुफ़ी से आती थीं। किचन में बैठ कर अम्मी के साथ बातें करतीं मानो कि वह फ़ैमिली की ही सदस्य हैं।

इसी तरह उनकी बड़ी बेटी जो नईमा शब्बीर साहिबा हैं वह कहती हैं कि बहुत दया करने वाली मुहब्बत करने वाली थीं। बे-इंतिहा सब्र करने वाली, अपनी जान पर अत्याचार करके दूसरों का ध्यान रखने वाली औरत थीं। ख़िलाफ़त की मुहब्बत हमारे दिलों में डाली। बाक़ायदगी से ख़त लिखने को कहती थीं। अपनी औलाद के हक़ में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की दुआएं पढ़ती रहती थीं और ग़रीबों और यतीमों का बहुत ध्यान रखती थीं। चंदे और सदक़े बड़ी बाक़ायदगी से दिया करती थीं। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहमहुल्ल्ला ने ख़ास शफ़क़त से उनका रिश्ता और निकाह शेख़ मुबारक अहमद साहिब से करवाया था जो मुबल्लिग़ सिल्सिला थे। उनकी पहली बीवी फ़ौत हो गई थीं और उनके पति फ़ौत हो गए थे। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस ने रिश्ता के समय शेख़ साहब को किसी जमाअत के काम से ख़ुश हो के कहा कि मैं आपको एक इनाम दे रहा हूँ। शेख़-साहब ने भी इस इनाम की क़दर की और वह इनाम जो था वह सफिया बेगम साहिबा की शक्ल में दिया। शेख़-साहब ने इसकी क़दर की और उनके बच्चों का जो पहले पति से बच्चे थे और पति उनके जवानी में फ़ौत हो गए थे उनका भी बहुत ख़्याल रखा। उनके बड़े बेटे शमीम भट्टी साहिब स्कूल और कॉलेज में मेरे साथ पढ़ते भी रहे हैं और मैंने देखा है कि शेख़-साहब ने भी इन बच्चों का बहुत ध्यान रखा और इसका हक़ अदा किया लेकिन सफिया बेगम साहिबा ने भी शेख़-साहिब का कार्यक्षेत्र में इस तरह साथ दिया जो एक वाक़फ़े ज़िन्दगी की बीवी का फ़र्ज़ है। बहुत कम मुबल्लग़ीन की बीवियां इस तरह हक़ अदा करती हैं जिस तरह उन्होंने हक़ अदा किया। मेहमानों की मेहमान-नवाज़ी नि:स्सवार्थ हो कर की और कभी शिकायत नहीं की और इसी तरह जमाअत के लोगों के लिए दुआएं भी बड़ी किया करती थीं। मुबल्लग़ीन जो शेख़-साहब के अधीन रहे उनके साथ, उनकी फ़ैमिलियों के साथ बड़ा अच्छा व्यवहार किया। मेरा तो ख़िलाफ़त के बाद उनसे अधिक सम्बन्ध पैदा हुआ, वाक़फ़ीयत भी हुई तो मैंने देखा कि ख़िलाफ़त की एक शैदाई थीं और ऐसे शैदाई और फ़िदाई लोग कम ही देखने में मिलते हैं। अल्लाह तआला उनके दर्जात बुलंद फ़रमाए और उनकी नस्लों को भी हमेशा जमाअत और ख़िलाफ़त का वफ़ादार रखे।

अगला जनाज़ा जो है वह आदरणीय अली अहमद साहिब रिटायर्ड मुअल्लिम वक़्फ़ जदीद का है। यह18 जून को 86 साल की उम्र में वफ़ात पा गए। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन। आपके पिता हज़रत मियां अल्लाह दत्ता साहिब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबी थे जिन्होंने 1903 ई में हज़रत मसीह मौऊद अलैहि अस्सलाम के सफ़र जेहलम के अवसर पर अपने गांव से दस बारह मील का पैदल सफ़र करके हुज़ूर अलैहिस्सलाम के हाथ पर बैअत की तौफ़ीक़ पाई। बहरहाल 1965 ई में उन्होंने वक़्फ़ किया। 1967 से 2008 ई तक लगभग 41 साल सिंध और पंजाब की विभिन्न जमाअतों में सेवा की। सैंकड़ों बच्चों और बच्चियों और मर्दों और औरतों को क़ुरआन पढ़ाया। आपकी तब्लीग़ी कोशिशों और दुआओं की बदौलत बीसियों नेक रूहों को जमाअत अहमदिया में शामिल होने का सौभाग्य नसीब हुआ। मरहूम मूसी थे। पीछे रहने वालों में पत्नी के अतिरिक्त दो बेटियां और तीन बेटे शामिल हैं। आपके एक बेटे अब्दुल हादी तारिक़ साहिब मुरब्बी सिल्सिला घाना में हैं और वहां के इंटरनैशनल जामिआ अहमदिया में सात साल से बतौर उस्ताद सेवा की तौफ़ीक़ पा रहे हैं। मौजूदा हालात की वजह से अपने पिता के जनाज़ा और तदफ़ीन में भी शामिल नहीं हो सके। आपके दो भतीजे भी मुरब्बी सिल्सिला हैं और तीन नवासे हाफ़िज़े क़ुरआन हैं।

मग़फ़ूर अहमद मुनीब साहिब , जो हमारे वाक़फ़े ज़िन्दगी मुरब्बी सिल्सिला हैं, आजकल मर्कज़ में हैं। वह कहते हैं कि आदरणीय मौलवी साहब वाकिफ ज़िन्दगी मुबल्लग़ीन और मुअल्लमीन के लिए निसन्देह एक उदाहरण थे। कम बोलने वाले, क्षमा करने वाले, अपने काम से काम रखने वाले, दुआ करने वाले, विनम्र मिज़ाज, ख़ुशी से मिलने वाले, ख़िलाफ़त अहमदिया के लिए सब से आगे, नाराज़ भी होते तो समझाने में दर्द नुमायां होता। क़नाअत शआरी बहुत थी। आज वे बच्चे और बच्चीयां जो मौलवी-साहब के शागिर्द थे बड़े हो गए हैं लेकिन उनके दिलों से मौलवी-साहब के उत्तम आचरण और मुहब्बत की यादें भूली नहीं हैं।

अल्लाह तआला उनके दर्जात बुलंद फ़रमाए और उनकी औलाद और नस्ल को भी उनकी ख़ूबियां जारी रखने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए।

अगला जनाज़ा आदरणीया रफ़ीकां बी-बी साहिबा पत्नी बशीर अहमद डोगर साहिब ओहदी पूर ज़िला नारोवाल का है जो 22 मई को वफ़ात पा गईं। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन। उनके ख़ानदान में अहमिदयत आपके दादा हज़रत मलिक सरदार ख़ान डोगर साहिब नम्बरदार के द्वारा आई जो सहाबी रज़ि थे। आपके बेटे रियाज़ अहमद डोगर साहिब कहते हैं कि मैंने जब से होश सँभाला है आपको बहुत नमाज़ी और परहेज़गार देखा है। नमाज़ रोज़ा की पाबन्द थीं। बहुत सी सूरतें आपको ज़बानी याद थीं। सुबह दूध बिलोते हुए अक्सर आप सूरत तग़ाबुन की तिलावत करती रहती थीं। पांचों नमाज़ बहुत एहतिमाम से अदा करती थीं। हर नमाज़ से पहले एक दो पोता पोती, नवासा नवासी को ज़रूर अपने साथ खड़ा करतीं ताकि बच्चों को भी नमाज़ का शौक़ पैदा हो। नमाज़ के बाद काफ़ी देर जानमाज़ पर बैठ कर तस्बीह करती रहती थीं। इसी तरह तिलावत भी ऊंची आवाज़ से करतीं और सारे घर में उनकी तिलावत की आवाज़ गूँजती थी। आपको बहुत सारी सूरतें ज़बानी याद थीं। ख़िलाफ़त से आपको बहुत अधिक लगाओ और मुहब्बत और अक़ीदत थी और समय के ख़लीफ़ा की दुआओं पर बड़ा विश्वास था। इस बात को बड़े फ़ख़र से लोगों को बतातीं कि मेरा बेटा भी मुरब्बी है। मेरा पोता भी मुरब्बी बन रहा है। मेरा नवासा भी मुरब्बी है और बावजूद इस के कि अपने बच्चों को बहुत याद करतीं परन्तु साथ यह भी कहा करती थीं कि ख़ुदा का बहुत फ़ज़ल है मुझ पर कि उसने मेरी शाख़ें दुनिया के कोने कोने में फैला दी हैं। पीछे रहने वालों में छ: बेटे और एक बेटी और पोते पोतियां और नवासे नवासियाँ शामिल हैं। आपके एक बेटे रियाज़ अहमद डोगर साहिब तन्ज़ानिया में सिल्सिला की सेवा की तौफ़ीक़ पा रहे हैं और वह भी मौजूदा हालात की वजह से और मैदान अमल में व्यस्त होने की वजह से आपके जनाज़े और तदफ़ीन में शिरकत नहीं कर सके थे। अल्लाह तआला उनको सब्र और हौसला प्रदान फ़रमाए। आपके एक नवासे अदील अहमद डोगर पाकिस्तान में मुरब्बी सिल्सिला के तौर पर सेवा की तौफ़ीक़ पार है हैं। एक पोता अय्याज़ अहमद डोगर जामिआ अहमदिया इंटरनैशनल घाना में दर्जा ख़ामसा का छात्र है। अल्लाह तआला मरहूमा से मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए। दर्जात बुलंद फ़रमाए। उनकी नस्ल को भी उनकी नेकियां जारी रखने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए।

इसी तरह आज मैं उन लोगों को भी जनाज़े में शामिल करूँगा जिनका पिछले ख़ुत्बों में सिर्फ वर्णन कर चुका हूं और हालात की वजह से जनाज़ा नहीं पढ़ाया गया जिनमें नासिर सईद साहिब शामिल हैं। ग़ुलाम मुस्तफ़ा साहिब शामिल हैं। इस्लामाबाद के डाक्टर नक़ी उद्दीन साहिब हैं वे शामिल हैं। ज़ुल्फ़क़ार साहिब मुरब्बी इंडोनेशिया शामिल हैं। अल्लाह तआला इन सबसे मग़फ़िरत और रहम का स्लूक फ़रमाए।

(अलफ़ज़ल इंटरनेशनल 31 जुलाई 2020 ई पृष्ठ 5 से 9)

☆ ☆ ☆ ☆

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस

ख़िलाफत का निज़ाम भी अल्लाह तआला और उसके रसूल के आदेशों और निज़ाम का हिस्सा है।

(ख़ुत्बा जुम्अ: 24 मई 2019 ई)

तालिबे दुआ

मुहम्मद शुएब सुलेजा पुत्र जनाब मुहम्मद ज़ाहिद सुलेजा मरहूम तथा फैमली, अहमदिया जमाअत कानपुर(उत्तर प्रदेश)

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :

1800 3010 2131

(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

पृष्ठ 2 का शेष

अज़ीमुश्शान मक़ासिद पर आधारित पुर मआरिफ़ सिल्सिला ख़ुतबात में से एक ख़ुतबा में यूं वर्णन फ़रमाया

"तारीख़ हमें बताती है कि केवल मक्का से ही नहीं बल्कि दूसरे इलाक़ों से भी क़बीलों के कई प्रतिनिधि अपने क्षेत्र कर छोड़ कर और अपने क़बीला को छोड़कर, मदीना में आकर धूनी जमा के बैठ गए थे और फिर वहीं बैठे रहे। उनकी जो हिजरत थी अपनी क़ौम या अपने देश से वे इस किस्म की नहीं थी जो मक्का से हिजरत थी बल्कि इस किस्म की थी जो एक वाक़िफ़ की हिजरत होती है जो अपना क्षेत्र छोड़ कर, अपनी रिश्तेदारियां छोड़ कर , अपने घर-बार को छोड़ के , अपनी जायदाद को छोड़ के, ख़ुदा के लिए मर्कज़ में आ जाता है और फिर मर्कज़ की हिदायत के अनुसार दुनिया के विभिन्न हिस्सों में काम करता है।"

(ख़ुत्बा जुम्अ: फ़र्मूदा 26 मई 1967 ई)

मानो तौहीद का महान मज़हर ख़ाना काअबा ही वक़्फ़े ज़िन्दगी की बुनियाद है और इसी बुनियाद पर स्थापित रहते हुए समस्त दुनिया में इस्लाम की सेवा भावना से सरशार अहमदी वाकफ़ीन ज़िन्दगी, अपने कर्मों से ख़ाना काअबा और एक ख़ुदा की महानता का प्रचार कर रहे हैं। अल्लाह तआला हम समस्त वाकफ़ीन ज़िन्दगी को ख़ाना काअबा के बनाने के मूल उद्देश्य को समझने और पूरा करने की तौफ़ीक़ प्रदान फरमाए और हमारी इस तुच्छ सेवा को स्वीकार फ़रमाए। आमीन

इसके बाद सुलेमान अख़तर छात्र दर्जा राबिया ने "वक़्फ़ का महत्त्व और उसकी बरकतों" के विषय पर एक तक़रीर की। क़ुरआन करीम में अल्लाह तआला फ़रमाता है: اِذْقَالَ لَهٗ رَبُّهٗۤ اَسْلِمْ قَالَ اَسْلَمْتُ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ

हज़रत आदम से लेकर इस दौर तक बहुत से अल्लाह की तरफ से भेज हुए दुनिया में आए और उनमें से प्रत्येक ख़ुदा की राह में अपनी ज़िन्दगी वक़्फ़ करने वाला था परन्तु इब्राहीमी क़ुर्बानी है जो सम्पूर्ण रूप से अल्लाह के लिए वक़्फ़ का उदाहरण बन गई हम वे ख़ुशनसीब हैं जो हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और उनके ग़ुलाम युग के महदी के सदक़े आज फिर इब्राहीमी क़ुर्बानी के वारिस बनाए गए हैं। हज़रत रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुबारक ज़माना में अल्लाह के लिए वक़्फ़ की ख़तरों वाली और कांटों वाली राहों पर चलने वालों के सरदार तो हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि, उमर फ़ारूक रज़ि, उसमान ग़नी रज़ि और अली मुर्तज़ा रज़ि हैं। परन्तु उनकी पैरवी में हज़रत अबू उबैदह रज़ि और अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि और तलहा रज़ि भी थे। उनमें मसअब बिन उमैर रज़ि भी थे जो इस्लाम के पहले मुबल्लिग़ होने के सम्मान से नवाज़े गए। फिर मदीना में अन्सार के फ़िदाई गिरोह हज़रत साद बिन मआज़, ख़ुबैब बिन अदी और अबू तलहा रिज़वानुल्लाह अलैहिम और उनके साथी अस्हाब की एक लम्बी सूचि है जिन्होंने अपनी क़ुर्बानी और वफ़ा की दास्तानें लिखी हैं।

वर्तमान युग में इस इलाही वक़्फ़ का उदाहरण रसूले पाक सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के रुहानी पुत्र हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम ने फिर ज़िन्दा किया और अपना सब कुछ ख़ुदा और रसूल पर कुर्बान कर दिया और फ़रमाया

"वक़्फ़ राह तो कनम गर जां दहिंदम सद हज़ार।"

हज़रत मसीह मौऊद अलैहि अस्सलाम फ़रमाते हैं:

"ख़ुदा तआला की राह में ज़िन्दगी का वक़्फ़ करना जो इस्लाम की हक़ीक़त है दो प्रकार का है। एक यह कि ख़ुदा तआला को ही अपना माबूद और मक़सूद और महबूब ठहराया जाए और इसकी इबादत और मुहब्बत और भय और रज़ा में कोई दूसरा साझा बाक़ी न रहे ,और उसकी तक़दीस और तस्बीह और इबादत और समस्त उबूदीयत के आदाब और आदेशों और अवामिर और हदूद और आसमानी क़ज़ा तथा क़दर के मामले दिल की गहराई से स्वीकार किए जाएं और बहुत अधिक विनय और विनम्रता से इन सब आदेशों और सीमाओं और कानूनों और तक़दीरों को मज़बूत इरादे के साथ सिर पर उठा लिया जाए और इसी तरह वे समस्त पवित्र सच्चाइयां और पवित्र मआरिफ़ जो उसकी व्यापक क़ुदरतों की मार्फ़त का द्वारा और उसकी मलकूत और सल्तनत के उच्च स्थान को मालूम करने के लिए एक सम्बन्ध और उसके उच्चता नेअमतों के पहचानने के लिए एक मज़बूत मार्गदर्शक हैं बख़ूबी जान लिए जाएं।

दूसरी किस्म अल्लाह तआला की राह में ज़िन्दगी वक़्फ़ करने की यह है कि उसके बंदों की सेवा और हमदर्दी और भलाई और बोझ उठाने और सच्चा ग़म दूर करने में अपनी ज़िन्दगी वक़्फ़ कर दी जाए दूसरों को आराम पहुंचाने के लिए दुख उठावें और दूसरों की राहत के लिए अपने पर दुख सहन कर लें।

(आईना कमालाते इस्लाम, रूहानी ख़ज़ायन, भाग 5 पृष्ठ 60)

फिर अल्लाह तआला ने आप से वफ़ा करने वाले ग़ुलाम प्रदान किए जिन्होंने आरम्भिक सदियों की यादें ताज़ा कर दीं जिनमें अव्वलीन हज़रत मौलाना नूरुद्दीन सय्यदना महमूद, सय्यदना नासिर, सय्यदना ताहिर और सय्यदना मसरूर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ हैं। इस ज़माना के महदी को हज़रत मौलाना अब्दुल करीम साहिब, मौलाना बुरहानुद्दीन और मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ जैसे ख़ुद्दाम प्रदान किए जिन्होंने दुनिया छोड़ करके ख़ुदा को धारण किया और मसीह के दरवाज़ा की दरबानी को पसन्द कर लिया।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहि अस्सलाम फ़रमाते हैं

इब्तिदा से तेरे ही साया में मेरे दिन कटे
गोद में तेरी रहा मैं मिस्ले तिफ़ले शीरख़वार

हदीस क़ुदसी में आता है हज़रत अनस रज़ि रिवायत करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह हदीस अपने रब से वर्णन फ़रमाई, अल्लाह तआला फ़रमाता है कि जब बंदा एक बालिशत मेरे क़रीब होता है तो मैं एक हाथ उसके क़रीब हो जाता हूँ, जब वह एक हाथ मेरे क़रीब होता है तो मैं दो हाथ उसके क़रीब हो जाता हूँ और जब वह मेरी तरफ़ चल कर आता है तो मैं उसकी तरफ़ दौड़ते हुए जाता हूँ।

(सही बुख़ारी, किताबुल तौहीद ,बाब क़ौलुल्लाह तआला)

यह विषय हज़रत मसीह मौऊद अलैहि अलसलो वस्सलाम को इल्हाम के द्वारा अल्लाह तआला ने बताया कि "जे तू मेरा हो रहें सब जग तेरा हो"। अत: सारी कायनात वाकिफे ज़िन्दगी के लिए संक्षिप्त कर दी जाती है। वह इलाही फ़ज़लों और रहमतों और बरकतों का मज़हर बन जाता है

वक़्फ़े ज़िन्दगी में क़ौम की ज़िन्दगी होने के बारे में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि फ़रमाते हैं कि: दुनिया में रुपया के द्वारा कभी तब्लीग़ नहीं हुई और जो क़ौम यह समझती है कि रुपया के द्वारा सारे संसार में अपनी तब्लीग़ को पहुंचा देगी इस से अधिक धोखा खाने वाली, इस से अधिक मूर्ख और इस से अधिक दीवानी क़ौम दुनिया में कोई नहीं। ज़िन्दगी की निशानी यह है तुम में से हर व्यक्ति अपनी जान लेकर आगे आए और कहे हे अमीरुल मोमिनीन यह ख़ुदा और उसके रसूल और उसके धर्म और उसके इस्लाम के लिए हाज़िर है जिस दिन से तुम यह समझ लोगे कि तुम्हारी ज़िन्दगियां तुम्हारी नहीं बल्कि इस्लाम के लिए हैं। जिस दिन से तुमने केवल दिल में ही यह न समझ लिया बल्कि व्यवहार में इसके अनुसार काम भी शुरू कर दिया उस दिन तुम कह सकोगे तुम ज़िन्दा जमाअत हो।

हुज़ूर और अधिक फ़रमाते हैं: तुम से जिस चीज़ की मांग की गई है और जो अकेली वास्तविक मांग है वह तुम्हारी जान की मांग है। न केवल तुम्हें इस मांग को पूरा करना चाहिए बल्कि प्रत्येक समय यह मांग तुम्हारे ज़हन में याद रहनी चाहिए क्योंकि उस समय तक तुम में साहस तथा दिलेरी पैदा नहीं हो सकती जब तक तुम अपनी जान को एक तुच्छ चीज़ समझ कर धर्म के लिए उसे क़ुर्बान करने के लिए प्रत्येक समय तैय्यार न रहो।

(ख़ुत्बा जुम्अ: फ़र्मूदा 11 जनवरी 1935 ई, ख़ुत्बाते महमूद भाग 16)

वर्तमान युग एक बेलगाम घोड़े की तरह तबाही की तरफ बढ़ रहा है। अत: हम अल्लाह तआला की बारगाह में दुआ करते हैं कि वह हमें सुलतान उल-क़लम की शिक्षाओं की रोशनी में इस दौर के जिहाद में बतौर आरम्भिक दस्ता के सेवाएं करने की तौफ़ीक़ प्रदान फरमाए और हमारे वक़्फ़ को अपनी कुबूलियत प्रदान फरमाए। (आमीन)

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने क्लास के क्रम अनुसार छात्रों की संख्या का जायज़ा लिया और सारी संख्या को जमा करके बताया कि छात्रों की कुल संख्या इतनी बनती है। इस पर प्रिंसिपल साहिब ने निवेदन किया कि एक छात्र मुमहदा कक्षा में दाख़िल होने के बाद आया नहीं और इसी तरह एक छात्र फ़ेल हुआ है। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया दो कम भी कर दिए जाएं तो फिर 114 बने। प्रिंसिपल साहिब ने निवेदन किया कि जो हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया है वह ठीक है इतनी ही संख्या है। इसके बाद हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि ख़ामसा वाले और कई दूसरे छात्र लन्दन आते रहते हैं और मिलते रहते हैं। जो पहले लंदन कभी नहीं आए वे आज बात करें बताएं।

एक छात्र एहसान अहमद ने हुज़ूर अनवर के पूछने पर बताया कि वह पाकिस्तान में पैदा हुआ और साल 2010 ई में जर्मनी आया। हुज़ूर अनवर ने पूछा कि क्या

जामिया में अपनी इच्छा से दाख़िल हुए या अम्मी अब्बा के कहने पर। इस पर छात्र ने बताया किया कि अपनी इच्छा से दाख़िल हुआ हूँ। हुज़ूर अनवर के पूछने पर छात्र ने बताया कि वह वक़्फ़े नौ नहीं है। इस पर हुज़ूर अनवर ने वाकफ़ीने नौ छात्रों का जायज़ा लिया और छात्रों के हाथ खड़ा करने पर फ़रमाया लगभग सारे ही वाकफ़ीन नौ हैं। इसी तरह फ़रमाया पाकिस्तान में वाकफ़ीने नौ जामिया में कम आते हैं और ग़ैर-वाकफ़ीने नौ अधिक हैं।

दर्जा ऊला के एक छात्र उवैस अहमद ने निवेदन किया कि तीन साल पहले पाकिस्तान से आया था। मेरा एक सवाल है कि अल्लाह तआला से कैसे मज़बूत सम्बन्ध स्थापित किया जा सकता है? इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया। अभी तक यही नहीं पता लगा। बस उसके आगे झुके रहो, झुके रहो, झुके रहो। जो तुझ से मांगता हूँ वह दौलत तुम्हीं तो हो कहते रहो। मिल जाएगा। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया उसको पकड़ लो फिर छोड़ो न। तो अल्लाह तआला से सम्बन्ध मज़बूत हो जाएगा। अल्लाह तआला का वादा है कि जो मेरी तरफ़ बढ़ता है तो मैं उसको अपनी तरफ़ रास्ता भी दिखाता हूँ तो तुम भी ख़ुदा की तरफ़ बढ़ने की कोशिश करो।

एक छात्र उम्र रशीद ने निवेदन किया कि पाकिस्तान से 2011 ई में आया था। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया पाकिस्तान से कहाँ से आए थे। इस पर महोदय ने निवेदन किया कि मरदान से। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया पंजाबी मर्दानी हो या वहां के स्थानीय हो और वहां शेख़ भी हैं। उनमें से हो। इस पर छात्र ने निवेदन किया कि पंजाबी हूँ और ख़ुद शेख़ नहीं लेकिन शेख़ फ़ैमिलीयां हमारे रिश्तेदार हैं।

एक छात्र बुरहानुद्दीन फ़ैज़ान ने निवेदन किया कि मेरा एक सवाल है कि अगर किसी छात्र को भाषा सीखने का शौक़ हो जो जामिया में नहीं पढ़ाई जाती तो क्या वह उस भाषा को सीख सकता है। इसके लिए क्या उचित है। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि छात्र पहले तो जामिया की शिक्षा पूर्ण करे। उसका ज़ोर जहाँ होगा वो पता लग जाएगा। जामिया की इंतिज़ामीया, प्रिंसिपल को, टीचरों को पता लग जाएगा और अगर उनकी रिपोर्ट आती है कि तुम्हारा रुझान किसी भाषा के सीखने में है या तुम ख़ुद इज़हार कर सकते हो तो फिर जामिया पास करने के बाद जायज़े लेकर कुछ को भाषा सिखाई जाती है।

हुज़ूर अनवर ने उससे पूछा क्या तुमने Abitur किया हुआ है। इस पर उस छात्र ने बताया कि Abitur किया हुआ है। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया फिर ठीक है। फिर तो यूनीवर्सिटी में भी दाख़िला आसानी से हो सकता है। लेकिन जायज़ा जामिया के बाद होगा। फिर हम फ़ैसला करेंगे। तुमने तो वक़्फ़ कर दिया है और अपनी गर्दनें डाल दी हैं बाक़ी आपने केवल इज़हार करना है कि यह मेरा शौक़ है। अब आपके इस इज़हार को पूरा करने का अवसर देना है या नहीं देना यह इंतिज़ामीया का काम है। प्राय अगर किसी को भाषाएं सीखने का शौक़ होता है तो उसको अवसर दे देते हैं।

एक छात्र चौधरी अय्याज़ अहमद ने सवाल किया कि अगर किसी मुरब्बी की भाषा में लुक्नत हो तो वह क्या करे कि उस पर क़ाबू पा सके। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया पहले तो यह कि आराम से बोलने की आदत डालो। जो धीरे बोलते हैं तो उनका ठीक हो जाता है। मैंने देखा है कि कई मुरब्बियों की भाषा में हल्की सी लुक्नत है। लेकिन जब वह तक़रीर करने के लिए खड़े होते हैं तो लुक्नत ख़त्म हो जाती है तो अल्लाह तआला का फ़ज़ल भी हो जाता है। बाक़ी यह कि जिसको अधिक है तो मुरब्बियों से बहुत सारे दूसरे काम भी हम ने लेने हैं, ले सकते हैं। ज़रूरी तो नहीं कि तुम्हारे से तक़रीर ही करवानी है। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि कई बार होता है कि लुक्नत वाले जब जल्दी से बोलने की कोशिश करते हैं या घबराहट में बोलते हैं तब अधिक बढ़ जाती है। अगर ज़रा थोड़ा सा अपने आपको कंट्रोल में रखें तो काफ़ी हद तक कंट्रोल कर लेते हैं।

एक छात्र हाफ़िज़ एहतिशाम अहमद ने निवेदन किया कि मैं साल 2014 ई में जर्मनी आया था। हुज़ूर अनवर के पूछने पर निवेदन किया कि रब्वह से क़ुरआन करीम हिफ़्ज़ किया था। महोदय ने निवेदन किया कि मेरा सवाल यह है कि इन्सान जब ख़लीफ़तुल मसीह के लिए दुआ करता है तो हुज़ूर अनवर की नज़र में कौन सी दुआ है जो इसको करनी चाहिए। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया। तुम्हारे निकट कौन सी दुआ है जो करनी चाहिए। ख़लीफ़तुल मसीह के जो काम हैं उनको सामने रखकर दुआ करो। यही दुआ किया करो कि जो उद्देश्य हैं वे पूरे हो जाएं। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया और जो तुम लोगों के लिए दुआ की जाती है वे भी तुम्हारे लिए स्वीकार हो जाए यह भी साथ कर लिया करो।

एक छात्र चौधरी शहरयार नवाज़ ने दुआ का निवेदन किया कि वीज़ा नहीं लग रहा। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया अल्लाह तआला फ़ज़ल फ़रमाए।

एक छात्र हाफ़िज़ लुक़्मान अहमद ने अपने लिए दुआ का निवेदन किया की कि पिछले एक दो साल से टांगों में परेशानी थी। अब काफ़ी बेहतर है। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया अल्लाह तआला फ़ज़ल करे।

एक छात्र फ़िरोज़ अदीब ने निवेदन किया कि मेरा सम्बन्ध गढ़ी शाहू लाहौर से है और 2015 ई में जर्मनी आया था। फ़रमाया यहां दिल लग गया है। छात्र ने निवेदन किया कि दिल लग गया है। हुज़ूर अनवर के पूछने पर छात्र ने बताया कि जर्मन भाषा सीखने की कोशिश कर रहा हूँ। महोदय ने दर्जा शाहिद की परीक्षाओं के लिए दुआ का निवेदन किया।

एक छात्र ने निवेदन किया कि मेरा नाम समीर ख़ान है। 2013 ई में पाकिस्तान से आया था। हुज़ूर अनवर के पूछने पर छात्र ने बताया कि इसका सम्बन्ध नारोवाल डेरा वाला से है। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया ख़ानों में से हो वे तो कारोबारी लोग हैं। तुम्हारे तो सारे रिश्तेदार कारोबारी हैं तो फिर तुम मुरब्बी किस तरह बन गए। इस पर महोदय ने कहा मेरी इच्छा थी कि मैं मुरब्बी बनूं।

एक छात्र ने निवेदन किया कि नाम अब्दुल रऊफ़ है। पाकिस्तान से नया आया हूँ। हुज़ूर अनवर के पूछने पर छात्र ने बताया कि वह साल 2014 ई में जर्मनी आया था। छात्र ने सवाल किया कि जब नमाज़ क़ज़ा होती है तो फिर बाद में दो रकअत स्थानीय लोगों को पूरी करनी होती हैं तो क्या इन दो रकअतों में सूरा फ़ातिहा के बाद कोई सूर: तिलावत करनी चाहिए। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया। क़ज़ा नमाज़ का बाद की दो रकअत से क्या सम्बन्ध है? छात्र ने निवेदन किया कि जब सफ़र पर होते हैं तो इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया उसको क़ज़ा नमाज़ नहीं कहते। इसको क़सर नमाज़ कहते हैं और जब इमाम नमाज़ पढ़ा रहा है। मैं ज़ुहर तथा असर की नमाज़ पढ़ा रहा हूँ और सफ़र में क़सर कर रहा हूँ तो स्थानीय लोगों ने बाद में जो दो रकअतें अदा करनी हैं तो क्या इन आख़िरी दो रकअतों में आप सूरा फ़ातिहा के अतिरिक्त कोई और सूरत पढ़ते हैं। इस पर छात्र ने निवेदन किया कि नहीं पढ़ते। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया नमाज़ क़सर के लिए तो कोई सवाल नहीं बनता। आपको यह सवाल करना चाहिए कि अगर इमाम नमाज़ पढ़ा रहा है और आरम्भिक रकअत पढ़ा चुका हो। अब आपने इमाम के सलाम फेरने के बाद छुटी हुई रकअत पूरी करनी हैं तो क्या इसमें सूरा फ़ातिहा के बाद कोई सूरत पढ़नी है या नहीं। यह आपका सवाल है।

अत: जो दो आरम्भिक रकअतें या एक रकअत आपकी रह गई है और आपने बाद में पूरी करनी है तो चूँकि उनमें सूरा फ़ातिहा के बाद कोई सूरत पढ़ी जाती है तुम इन रकअतों में कोई सूरत पढ़ सकते हो। आख़िरी रकअत में तो नहीं पढ़नी। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया यह बताओ कि क़ज़ा और क़सर में क्या फ़र्क़ है। इस पर एक छात्र ने बताया कि क़सर नमाज़ तो सफ़र में होती है और जब कोई नमाज़ रह जाए तो इसको बाद में अदा करना , क़ज़ा कहते हैं। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया क़ज़ाए उमरी क्या होती है? इस पर छात्र ने निवेदन किया कि क़ज़ाए उमरी ग़ैर अहमदियों में होती है। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया सारे साल बाद एक नमाज़ पढ़ ली और जान छूट गई। हम अहमदी ऐसा नहीं करते। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया। सफ़र वाला तो कोई मसला नहीं है। मग़रिब में तो वैसे ही तीन रकअत पढ़नी हैं। ज़ुहर, अस्र और इशा की चार-चार हैं तो क्या तुम इन नमाज़ों की आख़िरी दो रकअत में कोई सूरा पढ़ते हो। इस पर छात्र ने जवाब दिया कि नहीं पढ़ते। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया तो बस फिर जब सफ़र में भी आपने स्थानीय होने की कारण से यह दो रकअत पूर्ण करनी हैं तो सूरा फ़ातिहा के बाद सूरत नहीं पढ़नी।

एक छात्र माहिद इलयास ने निवेदन किया कि मेरा एक काफ़ी अच्छा जर्मन दोस्त है। मैं इसको काफ़ी समय से तब्लीग़ कर रहा हूँ। वह इस साल जलसा सालाना यूके में भी शामिल हुआ था। नमाज़ें भी पढ़ना शुरू हो गया था। जब से

अल्लाह तआला का उपदेश

رَبَّنَآ اِنَّنَآ اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ (आले इम्रान 17)

हे हमारे रब्ब निसन्देह हम ईमान ले आए

अतः हमारे गुनाह माफ कर दे और हमें आग के अज़ाब से बचा।

तालिबे दुआ

MUHAMMAD MAJEED AND FAMILY

AMEER DIST: ROPAR. PUNJAB

जामिया आया हूँ वह जमाअत से थोड़ा सा पीछे हट गया है क्योंकि मैं इसके साथ नहीं होता। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया जब तुम छुट्टियों में जाते हो तो इस से सम्पर्क करो। फिर उसको क़रीब लाओ, दोस्ती बढ़ाओ, उसको ख़त इत्यादि भिजवा दिया करो। छुट्टी वाले दिन इंतिज़ामिया की तरफ़ से प्रबन्ध के अधीन उसको मैसिज इत्यादि भेज सकते हो। आम पढ़ाई के दिनों में तो नहीं दे सकते। सप्ताह के अन्त में घर जाते हो तो इस से सम्पर्क कर लिया करो। बस यही तरीक़ा है और क्या चाहते हो। इस पर छात्र ने निवेदन किया कि इसके लिए दुआ का निवेदन है। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया। अल्लाह तआला फ़ज़ल करे। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया। बाक़ी तो नेक फ़ितरत लोग बड़े होते हैं एक जर्मन कल वहां वेज़ बादिन में मस्जिद के उद्घाटन पर आया हुआ था। बड़ी उम्र का था। वह बड़े इख़लास से बातें कर रहा था। तक़रीर के बारे में उसने कहा कि आपने यह कहा, आपने यह बात की, मैंने कहा तुम अहमदी हो। मैंने वैसे पूछा जिस तरह वह बात कर रहा था तो कहने लगा कि मैं अहमदी तो नहीं। लगता है बातें सुनकर अहमदी हो जाऊँगा। तो दुआ करो ऐसे लोग होते हैं। फ़ितरत नेक होती है। अल्लाह तआला उनके सीने को और अधिक खोले। जो शंकाएं हैं वे ख़त्म करे और वे अहमदी हो जाएं।

एक छात्र सय्यद बुख़ारी रमीज़ ताहिर ने निवेदन किया कि दुआ की दरख़ास्त करनी है। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया किस के बेटे हो। महोदय ने जवाब दिया सय्यद हसन ताहिर बुख़ारी साहिब का बेटा हूँ वह Dietzenbach मैं मुरब्बी सिल्सिला हैं।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया तुम्हें रशियन आती है। छात्र ने जवाब दिया रशियन भाषा जानता हूँ। हुज़ूर अनवर ने इस छात्र से इसके वालिद साहिब के बारे में भी पूछा जिनका दिल का ऑप्रेशन हुआथा। इस छात्र ने सवाल किया कि एक लड़की आजकल दुनिया में मशहूर हुई है। इसका नामा Greta Thunberg है। अख़बारों में इसका काफ़ी चर्चा है। बड़ी बड़ी संस्थाओं में उसने दुनिया की ग्लोबल वारमिन्ग के बारे में तक़रीर की है। जलवायु परिवर्तन की वह कैंपेन चला रही है। इस बारे में हुज़ूर का क्या विचार है। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया। देखो उसके ज़हन में अच्छी बात आई है। अल्लाह तआला ने इसको योग्यता दी है। वह बोल लेती है और बड़ों को यह कह रही है कि तुम हमारे भविष्य के लिए हमारी तबाही के सामान पैदा कर रहे हो। इसका बोलने का अंदाज़ भी अच्छा है। अगर वह कर ले तो ठीक है। बाक़ी यह है कि ग्लोबल वारमिंग तो हो रही है। लेकिन यह जंगें जो हो रही हैं। यह दुआ करो कि यह न हों। ग्लोबल वारमिंग के जो प्रभाव हैं,सौ साल बाद दुनिया ख़त्म होगी। यह विश्वयुद्ध हो गया तो इस से पहले ही दुनिया ख़त्म हो जानी है। इसलिए उसके लिए दुआ करनी चाहिए। बाक़ी वह लड़की अच्छा बोलती है तुम लोगों को इस से तक़रीर करने का सलीक़ा सीखना चाहिए। वह बड़े भरोसा के साथ लोगों के सामने बैठ कर बोल रही है।

एक छात्र अदील अहमद बाजवा ने निवेदन किया कि वह साल 2015 ई में टोबा टेक सिंह पाकिस्तान से जर्मनी आया था। मैं दुआ का निवेदन करना चाहता हूँ। फ़रमाया अल्लाह तआला फ़ज़ल फ़रमाए। हुज़ूर अनवर ने दया करते हुए फ़रमाया अच्छा खड़े हो जाओ सेहत मन्द! इस पर एक छात्र खड़ा हुआ। तो हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया। इसका अर्थ है कि तुम्हारे से अधिक सेहत मंद सारे जामिया में कोई नहीं क्योंकि मैंने सेहत मंद कहा है और तुम खड़े हो गए हो।

छात्र ने निवेदन किया कि मेरा जन्म मरदान का है। 2014 ई में जर्मनी आया हूँ। अपनी अढ़ाई साल की बेटी के लिए दुआ का निवेदन करना चाहता हूँ। हुज़ूर अनवर ने दया करते हुए फ़रमाया तुम्हारी सेठियों से रिश्तेदारी है या शेखों से रिश्तेदारी है। इस पर उसने निवेदन किया कि वह मेरा नन्हियाल है। हुज़ूर अनवर ने मुस्कुराते हुए फ़रमाया अच्छा तभी थोड़ा सा सेहत मंद हो।

इसके बाद प्रोग्राम के अनुसार ग्रुप फ़ोटोज़ हुईं। जामिया अहमदिया की समस्त कक्षाओं ने बारी बारी हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीरें बनवाने का सौभाग्य पाया। टीचर और काम करने वालों के ग्रुपों ने अलग अलग तस्वीर बनवाने का सौभाग्य पाया। आख़िर पर जामिया अहमदिया के समस्त छात्रों की हुज़ूर अनवर के साथ एक ग्रुप फ़ोटो हुई।

इसके बाद हुज़ूर अनवर ने प्रिंसिपल ऑफ़िस व अन्य ऑफ़िसिज़, स्टाफ़ रुम और क्लास रूम का निरीक्षण फ़रमाया। क्लास रूम के निरीक्षण के दौरान हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि क्लास रूम के मेज़ दरुस्त नहीं हैं उन पर तो छात्रों के हाथ थक जाते होंगे। डैसक टाइप के दूसरे टेबल चाहिऐं।

हुज़ूर अनवर ने हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और खलफ़ा की तस्वीरों के हवाला से इरशाद फ़रमाया कि नई हिदायत के अनुसार तस्वीरें लगाऐं।

आज के प्रोग्राम के लिए टीचरों और काम करने वालों की फ़ैमिलीज़ को भी बुलाया गया था। जिनके खाने का प्रबन्ध डाइनिंग हाल में किया गया था। हुज़ूर अनवर दया करते हुए कुछ देर के लिए लजना की तरफ़ भी तशरीफ़ ले गए।

इसके बाद हुज़ूर अनवर ने जामिया के किचन, स्टोर और Cool House का निरीक्षण फ़रमाया। किचन में ताज़ा हुवा आने और Exhaust Fan के प्रबन्ध का जायज़ा लिया और निगरान मैस हफ़ीज़ुल्लाह भरवाना साहिब को हिदायतें दीं और किचन में मौजूद काम करने वालों को भी खाने के हवाला से हिदायतें फ़रमाईं।

किचन के निरीक्षण के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला अज़ीज़ जामिया की लाइब्रेरी में तशरीफ़ लाए। हुज़ूर अनवर ने लाइब्रेरी में मौजूद किताबों की संख्या के बारे में पूछा। इस पर मुहम्मद इल्यास मुनीर साहिब ने बताया कि लाइब्रेरी में अल्लाह के फ़ज़ल से लगभग पंद्रह हज़ार किताबें मौजूद हैं। जब कि उद्घाटन के अवसर पर 3 से 4 हज़ार किताबें थीं।

हुज़ूर अनवर ने अहादीस की किताबें, विशेष रुप से जमाअत की तरफ़ से प्रकाशित सही बुख़ारी तथा सही मुस्लिम इसी तरह ख़ुतबात मसरूर की जिल्दों का जायज़ा लिया और उन्हें Update करने का उपदेश फ़रमाया।

लाइब्रेरी के निरीक्षण के बाद 4 बजकर 50 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला अज़ीज़ जामिया से वापस बैयतुस्सुबूह के लिए रवाना हुए। छात्रों ने विदाई दुआइया नज़म पढ़ते हुए प्यारे आक़ा को अलविदा कहा। लगभग 50 मिनट के सफ़र के बाद 5 बजकर 40 मिनट पर बैयतुस्सुबूह तशरीफ़ आवरी हुई। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए।

हुज़ूर अनवर दफ़्तरी कामों को पूरा करने में व्यस्त रहे। इसके बाद 8 बजे हुज़ूर अनवर ने तशरीफ़ ला कर नमाज़ मग़रिब इशा जमा करके पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए।

(शेष.....)

☆ ☆ ☆ ☆

एक दूसरे को समझने के बहाने घंटों अलैहदा बैठे रहना भी ग़लत है

हदीस में आता है, हज़रत मुग़ैरह रज़ि वर्णन करते हैं कि उन्होंने एक जगह मंगनी का पैग़ाम दिया आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि इस लड़की को देख लो क्योंकि इस तरह देखने से तुम्हारे और इस के बीच सहमति और प्रेम का संभावना अधिक है।

(तिर्मिज़ी, किताबुन्निकाह ,बाब फ़िन्नज़र इलल मख़तूबत:)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं

"इस आज्ञा को भी आजकल के समाज में कुछ लोगों ने ग़लत समझ लिया है और यह अर्थ ले लिया है कि एक दूसरे को समझने के लिए हर समय अलग बैठे रहें, अलग सैरें करते रहें घरों में भी घंटों अलग बैठे रहें तो यह चीज़ भी ग़लत है। अर्थ यह है कि आमने सामने आकर शक्ल देखकर एक दूसरे को समझने में आसानी होती है। कई हरकतों का बातें करते हुए पता लग जाता है। फिर आजकल के ज़माने में घर वालों के साथ बैठ कर खाना खाने में भी कोई हर्ज नहीं है। खाना खाते हुए भी एक दूसरे की बहुत सी हरकतें तथा आदतें प्रकट हो जाती हैं ओर अगर कोई बात नापसंदीदा लगे तो बेहतर है कि पहले पता लग जाए और बाद में झगड़े न हों और अगर अच्छी बातें हैं तो सहमति और प्रेम इस रिश्ते के साथ और भी पैदा हो जाती है दूसरे लोग कई बार उनका किरदार यह होता है कि अगर किसी का रिश्ता हो गया है तो इस को तुड़वाने की कोशिश करें। उनको आमने सामने मिलने से अवसर नहीं मिलेगा। एक दूसरे की हरकतें देखने से, क्योंकि एक दूसरे को जानते होंगे। लेकिन कई लोग दूसरी तरफ़ भी चरम को चले गए हैं उनको यह भी बर्दाश्त नहीं कि लड़का लड़की शादी से पहले या पैग़ाम के समय एक दूसरे के आमने सामने बैठ भी सकें उस को ग़ैरत का नाम दिया जाता है तो इस्लाम की शिक्षा एक समोई हुई शिक्षा है। न अधिकता न न्यूनता न एक सीमा ना दूसरी सीमा और इसी पर अनुकरण होना चाहिए इसी से समाज अमन में रहेगा और समाज से फ़साद दूर होगा।

(ख़ुत्बाते मसरूर,भाग 2 पृष्ठ 934 से 935 प्रकाशन कादियान)

(नाज़िर इस्लाहो इर्शाद मर्कज़िया कादियान)

☆ ☆ ☆ ☆

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 5 Thursday 20 August 2020 Issue No.34

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

तक्वा की ज़रूरत

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमात हैं

"हमारी जमाअत के लिए विशेष रूप से तक्वा की ज़रूरत है इस कारण से विशेष रूप से कि वे एक ऐसे व्यक्ति से सम्बन्ध रखते हैं और उस की बैअत के सिलसिला में हैं जिस का मामूरित का दावा है ताकि वे लोग जो चाहे किसी प्रकार के द्वेष शिर्कों तथा हसद में पड़े थे या किसी भी दुनिया के धंधों में पड़े थे इन समस्त आफतों से मुक्ति पाएं।

आप जानते हैं कि अगर कोई बीमार हो जाए चाहे उस की बीमारी छोटी हो या बड़ी अगर इस बीमारी के लिए दवा न की जाए और ईलाज के लिए दुख न उठाया जाए बीमार अच्छा नहीं हो सकता। एक काला दाग़ मुँह पर निकल कर एक बड़ा फ़िक्र पैदा कर देता है कि कहीं यह दाग़ बढ़ता बढ़ता सारे मुँह को काला न कर दे। इसी तरह गुनाह का भी एक काला दाग़ दिल पर होता है। छोटे गुनाहों से बड़े गुनाह हो जाते हैं। छोटे गुनाह वही दाग़ छोटा है जो बढ़कर अन्त में सारे मुँह को काला कर देता है।

(मल्फूज़ात भाग 7 प्रकाशन 2008 कादियान)

☆ ☆ ☆ ☆

सदर अन्जुमन अहमदिया कादियान के विभाग तज़य्युन में सेवा करने के इच्छुक ध्यान दें।

तज़य्युन विभाग कादियान में नई मन्ज़ूर की गई अम्रीकन बेस्ड ग्रास कट्टर मशीन के लिए ड्राईवर की असामी भरी जानी है जो दोस्त बतौर ड्राईवर इस असामी पर सेवा करने के इच्छुक हों वे अपनी दरख़ास्तें दो महीने के अन्दर नज़ारत दीवान सदर अन्जुमन अहमदिया में भिजवा सकते हैं।

शर्तें निम्नलिखित हैं

(1)उम्मीदवार के पास ड्राइविंग लाईसैंस और ड्राइविंग का अनुभव होना ज़रूरी है।

(2)उम्मीदवार थोड़ा बहुत टेक्नीकल काम भी जानता हो ताकि आवश्यकता अनुसार इस कट्टर मशीन को ठीक भी कर सके।

(3) उम्मीदवार ट्रैक्टर ट्राली चलाना जानता हो ।

(4)उम्मीदवार आज्ञाकारी हो और ज़रूरत के समय दूसरे काम के लिए भी तैयार हो। (5)उम्मीदवार के लिए शिक्षा की कोई शर्त नहीं है।

6)उम्मीदवार को बर्थ सर्टीफ़िकेट पेश करना ज़रूरी होगा।

(7)वही उम्मीदवार ड्राइवर की सेवा के लिए लिए जाएंगे जो इंटरव्यू बोर्ड तक़र्रुर कारकुनान में सफल होंगे।

(8)वही ड्राइवर सेवा के लिए लिए जाऐंगे जो नूर हस्पताल कादियान से मैडीकल फ़िटनैस सर्टीफ़िकेट के अनुसार सेहतमंद और तंदरुस्त होंगे।

(9)उम्मीदवार ड्राइवर को दर्जा दोयम के बराबर इलाउनस तथा अन्य सुविधाएं दी जाएँगी। (10) उम्मीदवार के कादियान आने जाने के सफ़र ख़र्च अपने करने होंगे।(11)अगर उम्मीदवार की स्लेक्शन होती है तो कादियान में अपने रहने का प्रबन्ध ख़ुद करना होगा।

नोटः उपरोक्त निवेदन फ़ार्म नज़ारत दीवान सदर अन्जुमन अहमदिया कादियान से प्राप्त कर सकते हैं। दरख़ास्त फ़ार्म नियम के अनुसार भर कर आने पर उस के अनुसार कार्रवाई होगी।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें।

(नाज़िर दीवान कादियान)

(Ph) 01872-501130 (Mob) 9877138347, 9646351280

e-mail: diwan@qadian.in

☆ ☆ ☆ ☆

मल्फ़ूज़ात पृष्ठ 1 का शेष

है قُلۡ مَا یَعۡبَؤُا بِکُمۡ رَبِّیۡ لَوۡلَا دُعَآؤُکُمۡ (अल-फ़ुर्क़ान:78) मैं ने एक-बार पहले भी वर्णन किया था कि मैं ने एक रोया में देखा कि मैं एक जंगल में खड़ा हूँ। पूर्व से पश्चिम इसमें एक बड़ी नाली चली गई है इस नाली पर भेड़ें लिटाई हुई हैं और हर एक क़स्साब के जो हर एक भेड़ पर खड़ा है, हाथ में छुरी है। जो उन्होंने उन की गर्दन पर रखी हुई है और आसमान की तरफ़ मंह किया हुआ है। मैं उन के पास टहल रहा हूँ। मैं ने यह नज़ारा देखकर समझा कि यह आसमानी हुक्म की प्रतीक्षा कर रहे हैं, तो मैंने यही आयत पढ़ी قُلۡ مَا یَعۡبَؤُا بِکُمۡ رَبِّیۡ لَوۡلَا دُعَآؤُکُمۡ यह सुनते ही इन क़स्साबों ने शीघ्र ही छुरियां चला दीं और यह कहा कि तुम हो क्या? आख़िर टट्टी खाने वाली भेड़ें हो।

अत: ख़ुदा तआला मुत्तक़ी की ज़िन्दगी की परवाह करता है और इस की बका को प्रिय रखता है और जो उस की इच्छा के विरुद्ध चले वह उस की पर्वा नहीं करता और उस को जहन्नुम में डालता है। इस लिए हर एक को अनिवार्य है कि अपने नफ़्स को शैतान की ग़ुलामी से बाहर करे। जैसे क्लोरोफ़ार्म नींद लाता है इसी तरह पर शैतान इन्सान को तबाह करता है और उसे ग़फ़लत की नींद सुलाता है और इसी में इसको हलाक कर देता है।

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 167 से 170 प्रकाशन 2008 कादियान)

☆ ☆ ☆ ☆

कुरआन का दावा..... पृष्ठ 1 का शेष

अच्छी चीज़ों को विभिन्न जगहों से उड़ा कर कोई नई और उच्च चीज़ बना देना भी तो एक कमाल है। अगर यह आसान बात है तो आरोप लगाने वाले वैसा ही काम करके क्यों नहीं दिखा देते। मगर यह जवाब तनज़्ज़ुल के रूप में है। वर्ना क़ुरआन करीम का दावा यह है कि इसमें वे सब सच्चाइयां भी मौजूद हैं जो पहली पुस्तकों में पाई जाती हैं अत: फ़रमाता है فِیۡهَا کُتُبٌ قَیِّمَةٌ (अलबय्यना) इसमें सब क़ायम रहने वाली सच्चाइयां जो ज़माना की दृष्टि से रद्द करने के योग्य न थीं मौजूद हैं और इस के अतिरिक्त फ़रमाता है وَیُعَلِّمُکُمۡ مَّا لَمۡ تَکُوۡنُوۡا تَعۡلَمُوۡنَ (बक़रा -18) अर्थात यह रसूल तुमको वह कुछ सिखाता है जो तुम पहले न जानते थे। अर्थात उस की शिक्षा केवल उन्हीं अच्छी शिक्षाओं पर आधारित नहीं जो पहली पुस्तकों में पाई जाती हैं बल्कि इस से अधिक इसमें ऐसी बातें भी हैं जो पहले दुनिया को मालूम न थीं। इसी तरह फ़रमाता है فَاِذَاۤ اَمِنۡتُمۡ فَاذۡکُرُوا اللّٰهَ کَمَا عَلَّمَکُمۡ مَّا لَمۡ تَکُوۡنُوۡا تَعۡلَمُوۡنَ (बक़रा 31) अर्थात जब तुम अमन में आ जाओ तो अल्लाह तआला को उन गुणों से याद करो जो ख़ुदा तआला ने इस क़ुरआन करीम के माध्यम से तुमको सिखाई हैं और जिनका ज्ञान इस से पहले तुमको प्राप्त न था इसमें यह दावा किया गया है कि क़ुरआन करीम में अल्लाह तआला के गुणों का ऐसा अधिक ज्ञान दिया गया है जो इस से पहले दुनिया को प्राप्त न था।

(तफ़सीर कबीर, भाग 1 पृष्ठ 226 प्रकाशन कादियान 2010 ई)

☆ ☆ ☆ ☆

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad